भाषा एवं लिपिक संवर्धन हेतु

मिथिलाक्षर ज्ञानमाला

संकलनकर्ता:
हरि मोहन झा

संपादन:
उज्ज्वल कुमार झा
अरुण कुमार मिश्र

विशेष सहयोग:
श्रीमती मनोरमा झा

''एहि पोथीक मुख्य उद्देश्य मैथिलवृंदकेँ मिथिलाक्षर सिखबाक लेल समग्र सामग्री उपलब्ध करेबाक अछि।''

मिथिलाक्षर
ज्ञानमाला

संकलन : हरि मोहन झा

संपादन : उज्ज्वल कुमार झा
अरुण कुमार मिश्र

विशेष सहयोग : श्रीमती मनोरमा झा

कला संपादन : कमल मोहन ठाकुर
केएमटी ग्राफिक्स, सन्त नगर, दिल्ली-110084
संपर्क: 9717949383, ई-मेल: kmtgrafix@gmail.com

संस्करण : प्रथम संस्करण 2019 (1000 प्रति)
द्वितीय संस्करण 2020 (2000 प्रति)

सहयोग राशि : ₹ 80/- मात्र

प्रकाशक : **सिद्धिरस्तु (पंजी०)**
3905, गली नं. 104, बी-ब्लॉक, अपेक्स रोड,
संतनगर, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन- 9971919826, 9310475355, 9431693352

© सिद्धिरस्तु (पंजी०)

पोथी संबंधित कोनो तरहक विवादकेँ निपटाराक न्यायक्षेत्र दिल्ली होयत। बिना अनुमति एहि पोथीक सामग्रीक उपयोग अथवा दुरूपयोग कानूनी अपराध मानल जायत।

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒝

𑒣𑒩𑒧 𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨 𑒠𑒰𑒠𑒰𑒖𑒲

𑒮𑓂𑒫𑓆 (𑒬𑓂𑒩𑒲) 𑒑𑒱𑒩𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒗𑒰

𑒏𑒹𑓀

𑒔𑒩𑒝 𑒏𑒧𑒪𑒧𑒹

𑒮𑒰𑒠𑒩 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞।

-𑒯𑒩𑒱 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒗𑒰

समर्पण

परम पूज्य दादाजी

स्व. (श्री) गिरीन्द्र मोहन झा

कँ

चरण कमलमे

सादर समर्पित।

–हरि मोहन झा

प्रकाशकीय सहयोग

डॉ॰ मदन मोहन झा
सदस्य, बिहार विधान परिषद;
अध्यक्ष, बिहार राज्य कांग्रेस;
सचिव, नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय,
दरभंगा (बिहार)

श्रीमती पूनम कुमारी
पति–डॉ॰ अजय कुमार झा
स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार
गनौली, अंधराठाढ़ी, मधुबनी

श्री सुरेश झा
फॉरेंसिक ऑडिटर,
चार्टर्ड एकाउंटेंट आ समाजसेवी
लगमा, घनश्यामपुर, दरभंगा

श्री शारदानन्द झा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी,
भारत सरकार

डॉ. कन्हैया कुमार चौधरी
जमशेदपुर, झारखंड

श्री अभय कान्त झा
अनुभाग अधिकारी, भारत सरकार

श्री ललित कुमार झा
बरहा, बेनीपट्टी, मधुबनी
सम्प्रति : सेक्टर–24, रोहिणी, दिल्ली

श्री उदय कान्त मिश्र
देवपुरा, बेनीपट्टी, मधुबनी

श्रीमती विभा झा
पति–श्री अरुण कुमार झा,
मकरंदा, मनीगाछी, दरभंगा

श्री गौरव कुमार
कस्टम इंस्पेक्टर, भारत सरकार

श्रीमती नीतू अनीता झा
पति–नीरज कुमार झा
बलिया, बेनीपट्टी, मधुबनी

विषय सूची

पाठ	पृष्ठ संख्या
भूमिका	9
आभार ज्ञापन	10
मिथिलाक्षरक संबंधमे दू टूक बात	12
पाठकवृंदक नाम संदेश	18
स्वर वर्ण	19
व्यंजन वर्ण	22
अभ्यास (मात्रारहित)	29
मात्राक ज्ञान	30
ककहरा	35
अंक लेखन	46
संयुक्ताक्षर प्रकरण	47
मात्रायुक्त संयुक्ताक्षर	68
अभ्यास (संयुक्ताक्षर सहित)	74
मिथिलाक्षर पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि	78
संदर्भ	80

भूमिका

मैथिली भाषाक लिपि 'मिथिलाक्षर'क समग्र विकास लेल **सिद्धिरस्तु (पंजी.)** निरंतर प्रयासरत अछि। मैथिली भाषाकेँ संवैधानिक मान्यता भेटलाक उपरांतो एहि भाषाक अपन लिपिकेँ प्रति सरकार आओर मैथिलक उदासीन रवैया एकर सर्वांगीण विकासक मुख्य अवरोधक रहल अछि। विगत किछु वर्षसँ मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार जोर पकड़लक अछि मुदा मिथिलाक्षर लिपिक सर्वसुलभ आ दोषरहित पोथीक उपलब्धता नहिं हेबाक कारणे मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार समुचित रूपसँ नहि भऽ पाबि रहल छल। अत: मिथिलाक्षर पोथीक प्रकाशन लेल सिद्धिरस्तु संस्था कृतसंकल्पित भेल। एहि पोथीक प्रथम संस्करण जून 2019 मे आयल छल, जकर सबटा प्रति वितरित भऽ चुकल अछि। मैथिली प्रेमीक उत्साह आओर पोथीक निरंतर बढ़ैत माँग केँ देखैत एकर दोसर संस्करण प्रकाशित कयल जा रहल अछि, एहि संस्करणमे पाठक वर्ग केँ सुझाव आ मिथिलाक्षरक विद्वान सभ सँ गहन विमर्शक उपरांत, वैकल्पिक रुप आ विशेषकर मात्रायुक्त संयुक्ताक्षर समावेश कएल गेल अछि।

सिद्धिरस्तु (पंजी.) संस्थाक समक्ष एकटा यक्ष प्रश्न छल जे एकर मूल्य कतेक राखल जाय, जाहिसँ ई पोथी मैथिलवृंद धरि सहज रुपसँ पहुँचि सकय, एहि सत्प्रयासक लेल सिद्धिरस्तु (पंजी.) संस्था ओ सब मैथिली भाषानुरागी केँ आभारी अछि, जिनकर आर्थिक सहयोगक फलस्वरूप एहि पोथीक मूल्य प्रथम संस्करण सँ कम राखल गेल अछि। पोथीक प्रकाशनमे आर्थिक सहयोगकर्ताक विवरण 'प्रकाशकीय सहयोग' मे वर्णित अछि।

"मिथिलाक्षर ज्ञानमाला"क द्वितीय संस्करण अपने लोकनिक सोझाँ प्रस्तुत अछि। हमरा सभकेँ पूर्ण विश्वास अछि जे मैथिलवृंद मिथिलाक्षर लिपि सीखताह आ मिथिलाक्षर लिपि पुन: अपन गौरवमयी स्थान प्राप्त करत।

30 जनवरी, 2020 (वसंत पंचमी)
नई दिल्ली

अरुण कुमार मिश्र
उज्ज्वल कुमार झा

आभार ज्ञापन

"मिथिलाक्षर ज्ञानमाला" पोथीक द्वितीय संस्करण अहाँ सभक समक्ष प्रस्तुत करैत हम बहुत हर्षित छी। सभसँ पहिने हम, ओहि मैथिलजन कँ प्रति अपन आभार व्यक्त करैत छी जे एहि पोथी कँ हाथों-हाथ लेलनि। प्रथम संस्करणमे ई पोथी 1000 प्रति छपल छल जे मात्र छः महीनाक समयांतरालमे वितरित भऽ गेल। पोथीक माँग आ किछु नव जानकारी भेलोपरांत एहि पोथीक पुनः प्रकाशनक निर्णय लेल गेल। प्रथम संस्करण संबंधी किछु बात सेहो हम उद्धृत कऽ रहल छी।

अररिया महाविद्यालयक मैथिली विषयक विभागाध्यक्ष स्व. (प्रो.) राधा रमण चौधरी आ हमर मित्र श्री अभय कान्त झा (अनुभाग अधिकारी, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)जीकँ प्रेरणा सँ हम मिथिलाक्षर सीखलहुँ मुदा संतुष्ट नहि भऽ सकलहुँ। अपन मित्रगण सर्वश्री अरुण कुमार मिश्र, उज्ज्वल कुमार झा, शारदानंद झा आदि सँग बहुत मंथन कयलाक उपरांत एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ जे सर्वप्रथम मिथिलाक्षर लिपिक संरक्षण, संवर्धन आ प्रचार-प्रसारकँ वास्ते एकटा पोथी संकलित कयल जाय, जाहिमे मिथिलाक्षर लिपिके विस्तृत जानकारी समेकित होइ। एहि महती उद्देश्यकँ पूरा करैक हेतु अनेकों श्रोतक खोजमे लागि गेलहुँ जकर विस्तृत विवरण एहि पोथीक अंतमे "संदर्भ" मे देल गेल अछि। पोथी निर्माणक काज दुरूह छल कारण जे मिथिलाक्षर लिपिक सर्वसुलभ आ पूर्णतः शुद्ध फॉण्ट वा काँटा उपलब्ध नहिं छल। हम श्री कमल मोहन ठाकुर जीक बहुत आभारी छी जे मिथिलाक्षरक प्रत्येक अक्षर/वर्ण, मात्रा आ संयुक्ताक्षरक स्वरूप कम्प्यूटर द्वारा बनौलनि। एहि पोथीक प्रणयनकालमे हमर प्रेरणास्रोत रहल, स्व. (श्री) विश्वनाथ झा जीक ओ वक्तव्य जकरा उद्धृत केनाइ आवश्यक अछि-

उत्पत्स्यते हि मम कोऽपि समानधर्मा।
कलोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

अर्थात् पृथ्वी विशाल अछि, काल निस्सीम आ अनन्त, तैं विश्वास अछि जे आई नहि कालिह कियो-ने-कियो मिथिलाक्षर लिपि कँ पुनर्जीवित करताह।

हम श्री प्रेमकांत झा (सेवानिवृत प्राध्यापक), श्री रमेश चन्द्र झा (अवर सचिव, भारत सरकार), श्रीमती नीतू कुमारी, श्रीमती नीतू झा "नंदनी", अग्रजतुल्य श्री प्रसून कुमार झा, श्री आनंदजी झा (शिक्षक, दिल्ली सरकार) आ श्री विशाल कुमार झा कँ आभार व्यक्त करैत छियैन, जे समय-समय पर हमरा मार्गदर्शन आ प्रोत्साहित करैत रहलाह। साहित्यकार डॉ. भूवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता जीक आशीर्वाद हमेशा बनल रहल।

प्रयागराज स्थित सर (डॉ.) गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठसँ सेवानिवृत्त डॉ. रामकिशोर झा जे मिथिलाक्षर, बांग्ला, उड़िया, नेवारी आदि लिपिक ज्ञाता, संस्कृतक विद्वान आ 15 टा पांडुलिपिक संपादन कयने छथि। हम डॉ॰ झाक प्रति आभार व्यक्त करैत छियैन जे बहुत व्यस्त रहैत एहि पोथीक एक-एक वर्ण, मात्रा आ संयुक्ताक्षर कँ अवलोकन कएलन्हि। हुनक समेकित मार्गदर्शनमे ई पुस्तक संपादित भेल।

"मिथिलाक्षर ज्ञानमाला" कँ द्वितीय संस्करण हेतु हम श्रीमान् देवानंद मिश्र, शिक्षक (जलसैन, मधुबनी), श्रीमती शैव्या झा (बंगलुरू), श्रीमान हेमन्त झा, सहायक अनुभाग अधिकारी, भारत सरकार (ककरौल, मधुबनी) आ श्रीमती स्मृति श्री (धेरुख, दरभंगा) कँ विशेष रुप सँ आभारी छी। एहि पोथीक विस्तार हेतु हिनकर सभक योगदान अविस्मरणीय अछि। श्रीमती मनोरमा झा, श्रीमती शैव्या झा आ श्रीमती स्मृति श्री एहि पोथीक हेतु नव-नव संयुक्ताक्षर विभिन्न पोथी सँ ताकि कँ देलैन। हम स्वयं दुर्गा सप्तशती (मिश्रबन्धु प्रकाशन, जमुथरि) सँ अनेकों नव-नव संयुक्ताक्षर निकालि कँ एहि पोथीमे स्थान देलहुँ अछि। श्रीमती मनोरमा झा (शिक्षिका, दामोदर घाटी निगम; नवादा दरभंगा) जी कँ सहयोग आ मेहनत अवर्णनीय अछि। हम सिद्धिरस्तु (रजि.) संस्था द्वारा संचालित मिशन मिथिलाक्षर लिपि कँ संग समर्पण भाव सँ जुड़ल समस्त टीम कँ कोटि-कोटि आभारी छी जे ओ सब समय-समय पर हमर उत्साहवर्धन करैत रहलथि।

हम अपन वंदनीय माता श्रीमती वीणा देवी आ पिता श्री शैलेन्द्र मोहन झाक चरणवंदन करैत अपन अनुज श्री अमित मोहन झा एवं सब मित्र-बंधु के स्नेहाभार ज्ञापित करैत छी, संगहि अपन भार्या मणिमाला आ अपन छोट-छोट दुनू बालक चि. आदित्य मोहन झा आ चि. अनंत मोहन झा के स्नेह ज्ञापित करैत छियैन जिनका पर एहि पुस्तकक संकलन कालमें यथोचित समय नहिं दऽ सकलियैन्ह।

हरि मोहन झा
भंडारिसम (भगवती वाणेश्वरी स्थान)
मनीगाछी, दरभंगा-847422

तिथि : 30.01.2020 (वसंत पंचमी)

मिथिलाक्षर लिपिक संबंध मे दू टूक बात

आदि काल सँ मनुक्ख अपन मनोभाव वा विचार कँ तत्कालीन समयानुसार शिलाखंड, भित्ति, तालपत्र, ताम्रपत्र वा कागज पर कोनो रेखा, कोनो कल्पित चिन्ह वा कोनो विशेष प्रतीककँ माध्यम सँ व्यक्त करैत रहल अछि। कालक्रममे एहि तरहक चिह्न वा प्रतीकमे अनेकानेक परिवर्तन होईत रहल आ प्रत्येक अक्षरक लेल एकटा मानक रूप सामने आयल। इयैह मानक रूप कँ "लिपि" कहल गेल अर्थात लिपि एकटा एहन महत्वपूर्ण साधन बनि गेल जाहि माध्यम सँ मनुक्ख अपन चिंतन, अपन विचारधारा आ अपन ज्ञानक धरोहरकँ आगू के पीढीक वास्ते सुरक्षित कय सकल, आओर मानव सभ्यताक महान परंपराक मार्ग प्रशस्त कयलक। प्रारम्भमे लिपि लिखबाक तरीका चित्रात्मक छल। तत्पश्चात् चित्रात्मक-लिपिक जगह पर प्रतीकात्मक-लिपिक प्रयोग होमय लागल। एहि क्रममे आर्य लोकनि ब्राह्मी लिपिक आविष्कार कयलनि। एहि ब्राह्मी लिपि सँ कतेको लिपि कँ जन्म भेल। मिथिलाक्षर/तिरहुता लिपिक जन्म सेहो ब्राह्मी लिपि सँ भेल अछि अर्थात मिथिलाक्षर लिपि, भारतक पुरातन लिपिमे सँ एक अछि।

अपन स्वर्णिम कालमे मिथिलाक्षर लिपिक क्षेत्र बहुते व्यापक छल। प्राचीन कालमे मिथिला, दर्शन, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, धर्म, न्याय, मीमांसा आ आचार-विचार आदिकँ अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्र छल। ओहि समयमे संस्कृत भाषाक प्रमुख लिपि मिथिलाक्षर लिपि छल। मिथिलाक्षर-लिपि एतेक समृद्ध लिपि छल जाहि सँ बाँग्ला, असमिया आ उड़िया आदि विभिन्न लिपिक जन्म भेल मुदा एहि सँ पैघ दुर्भाग्य की भऽ सकैत अछि जे मिथिलाक्षर लिपि, बाँग्ला, असमिया आ उड़िया लिपिकँ मातृलिपि रहितहुँ, मृत अवस्था में पहुँचि गेल अछि, आओर ई तीनू लिपि बहुत विकसित भऽ गेल अछि। एकरा हेतु शासकीय उदासीनताक संग-संग हम सब मैथिलगण सेहो बहुत दोषी छी।

एखन मिथिलाक्षर-लिपिक प्रमुख श्रोत पाण्डुलिपि आ मातृकाग्रन्थ अछि। पाण्डुलिपि ओहि दस्तावेजकँ कहल जाइत अछि जे एक या एक सँ अधिक मनुक्खक द्वारा हाथसँ लिखल गेल होय। प्राचीन समयमे ऋषि-मुनिगण जखन विचार-मीमांसा करैत छलाह तऽ अपन ज्ञानकँ अनेकों तरीका सँ जेना - भित्तिचित्र, शिलापत्र, ताड़पत्र, ताम्रपत्र, कागज आदि पर लिपिबद्ध करैत वा कराबैत छलाह। एकर मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञानक अति पुरातन आ समृद्ध परंपराक संरक्षण करब छल। वेदक गंभीर आ महत्वपूर्ण ज्ञान सँ पञ्चतन्त्रक बाल-कथा आदि सब ज्ञानागार रूपी ग्रन्थक रचना संस्कृत भाषामे अनेकों लिपिमे हाथ सँ लिखल गेल अछि। एहि पाण्डुलिपि सबकँ देखि प्रख्यात जर्मन

विद्वान मैक्समूलर अपन पुस्तकमे लिखने छथि कि "एहि संसारमे ज्ञानी आ पण्डितक देश केवल भारत अछि, जतय विपुल ज्ञानसम्पदा मातृकाग्रंथमे सुरक्षित अछि"। एहि पाण्डुलिपि या मातृकाग्रंथक संरक्षण बहुत जरूरी अछि। मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल कतेको पाण्डुलिपि या मातृकाग्रंथ केवल मिथिला-क्षेत्रमे नहि, बल्कि देश-विदेशक कतेको प्रतिष्ठित शिक्षण-संस्थान, संग्रहालयमे, एकाध सौमे नहि, बल्कि हजारोंमे राखल गेल अछि। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, बनारस; सर गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ, प्रयागराज; पटना संग्रहालय, पटना; खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना; कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा; नागार्जून बौद्ध संस्थान, गोरखपुर; भंडारकर शोध संस्थान, पुणे; संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर आदि अनेकों संस्थान अछि जतय मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकाग्रंथ, एहि संस्थान सभक पुस्तकालयकेँ शोभा बढ़ा रहल अछि। जापान, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशमे सेहो मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकाग्रंथ राखल गेल अछि। कतेक एहनो व्यक्ति छथि जिनका घरमे मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकाग्रंथ राखल छन्हि। मैथिलजनक ई परम कर्तव्य अछि जे एहि पाण्डुलिपिमे अंतर्निहित ज्ञानक प्रकाश सँ मिथिलाक संगहि-संग संपूर्ण विश्व केँ आलोकित करथि।

सन् 1971 ई.मे 'बांग्लादेश' नामक एकटा स्वतन्त्र देशक स्थापना एकटा एहन अविस्मरणीय घटना छल जे संपूर्ण विश्वकेँ स्तब्ध कऽ देलक कारण एहि देशक स्थापना केवल आओर केवल अपन भाषा आ लिपिकेँ बचेबाक हेतु भेल छल। 21 फरवरी, 1952 ई. केँ तत्कालीन पाकिस्तान सरकारक उर्दू भाषाकेँ बांग्ला भाषी जनता पर थोपैक निर्णयक विरोध, ढ़ाका विश्वविद्यालयक छात्रगण आ आमजन बहुत जोरदार ढ़ंग सँ कयलनि आओर अपन भाषा आ लिपिकेँ रक्षार्थ विद्रोह कऽ देलनि। परिणाम सभक सामने अछि। विश्व संस्था "संयुक्त राष्ट्र संघ"केँ युनेस्को हुनकर सभक अपन भाषा आ लिपिकेँ प्रति सम्मान देखि, हुनकर सभक सम्मानमे, सन् 1999मे 21 फरवरी कऽ "विश्व मातृभाषा दिवस" घोषित कऽ देलक। एहि संग्राममे कतेको बांग्लादेशी लोकनि अपन भाषा आ लिपिकेँ बचेबाक लेल अपन प्राण तक न्योछावर कऽ देलक मुदा कतेको मैथिलवृन्द एहन छथि जिनका सबकेँ मैथिली बाजैमे ग्लानिक अनुभव होइत छनि। एहन मैथिलवृन्द अपन घरहुँमे मैथिली बाजै सँ परहेज करैत छथि आओर अपन बच्चा सभकेँ मैथिलीक ज्ञान नहि दैत छथिन्ह। यहूदी राष्ट्र इजराइल अपन लुप्तप्राय भाषा आ लिपि 'हिब्रू' के पुनर्जीवित कऽ अपन देशमे पूर्णरुप सँ लागू कऽ देलक। एहि सँ ई तऽ स्पष्ट अछि जे यदि हम सभ मैथिलगण ठानि ली तऽ मिथिलाक्षर-लिपि सम्पूर्ण

मिथिला-क्षेत्रमे समग्र रुप सँ पसरि जायत आओर पुनः अपन समृद्ध अवस्था कँ ग्रहण कऽ लेत।

प्रयागराज स्थित सर (डॉ.) गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ सँ सेवानिवृत डॉ. रामकिशोर झा जी कँ अनुसार बंगला-लिपि आ असमिया लिपि, मैथिली-लिपि सँ उद्‌भूत भेल अछि-एहि तथ्य केँ बंगाल प्रान्तक सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी मुक्तकण्ठ सँ स्वीकार कएने छथि। एहि तथ्यकँ डॉ. झा जी सेहो अपन दीर्घकालीन ग्रन्थ-सम्पादनजन्य अनुभव सँ अंगीकार कयलनि। डॉ. झाक अनुसार मैथिली-भाषाक अपन स्वतन्त्र लिपि अछि जाहिमे अपन सभक पूर्वज द्वारा संरक्षित अपार-ज्ञानराशि विविध शास्त्रमे ग्रन्थरुप मे सुरक्षित कएल गेल अछि। मुदा सम्प्रति एहि लिपिक पढ़यबाला लोकक सर्वथा अभाव भेल जाइत अछि। जाहि कारणँ अपन पूर्वज-द्वारा सुरक्षित ज्ञान-राशि सँ हमरा लोकनि ओ हमर अगिला पीढ़ी अपरिचित भेल जाइत छथि। एहि सब कारण सँ मिथिलाक्षर लिपि कँ संरक्षण, प्रसार-प्रचार आ निरंतर प्रयोग जरुरी अछि।

प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरमैता जीकँ अनुसार आजुक आवश्यकता अछि जे म.म. हर प्रसाद शास्त्री एवं बबुआजी मिश्र जेकाँ मिथिला एवं नेपाल सँ मैथिली पाण्डुलिपिक विविध परिवर्तित किं वा रूपान्तरित स्वरूपक संकलन उपलब्ध कराबी। ताहि वास्ते पुरान मैथिली ग्रंथक उद्धार, संधान एवं जोरदार अभियान चलैक चाही। तखने बंगला, उड़िया, मैथिली लिपि सभक सम्यक स्वरूप दृष्टिगोचर होयत।

मैथिल साहित्य संस्थान, पटना कँ सचिव श्री भैरव लाल दास जी के कहब छनि जे मिथिलाक सभ क्षेत्रमे अभिलेख, ताम्र पत्र, दान पत्र, ताल पत्र, मन्दिर शिलालेख, पाण्डुलिपि, धार्मिक ग्रंथ सहित अन्य महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक दस्तावेज मिथिलाक्षर मे अछि। एतबहि नहि, मिथिला सँ बाहर सेहो एहि लिपि मे कतेको महत्वपूर्ण दस्तावेज अछि जकर अध्ययन आ अनुशीलन अत्यंत आवश्यक अछि। मिथिलाक्षरक कतेको पाण्डुलिपि आ ग्रंथ सभक अनुवाद, अध्ययन आ अनुशीलन एखन धरि नहि भेल अछि आ एहि तरहँ मिथिलाक्षर सीखऽवला कँ अध्ययनक एकटा विशाल क्षेत्र भेटि सकैत छनि। जे एहि तरहक गंभीर अध्ययनक क्षेत्रमे प्रवेश नहि करऽ चाहैत छथि, हुनका लेल सेहो कतेको अवसर छनि। भाषा, संस्कृति आ परम्पराक संरक्षण ओ संवर्द्धन मे एकटा स्वयंसेवक बनबाक गौरवान्वित अवसर तऽ भेटिये रहल छनि।

मिथिलाक्षरक स्वरूप निर्धारणक लेल 1925 ई. मे एकटा समिति बनाओल गेल रहै जाहि मे पं. जीवनाथ राय, पं. बलदेव मिश्र, बाबू रामलोचन शरण, बाबू गंगाधर मिश्र, बाबू हरिवंश झा, बाबू सिद्धनाथ मिश्र आ बाबू उदित नारायण दास कँ सदस्य बनाओल गेल रहनि। पं. जीवनाथ राय आ कोलकाता मे रहनिहार मैथिल लोकनिक सहयोगसँ मिथिलाक्षर फॉण्टक निर्माण आ विकास भेल। लहेरियासरायक विद्यापति प्रेस द्वारा मिथिलाक्षरमे प्रकाशन आरंभ भेल। बादक वर्ष मे मैथिल लोकनि एहि प्रयासक आलोचना सेहो आरंभ केलनि। स्वयं राजकुमार कामेश्वर सिंह एहि पर चिन्ता प्रकट कयने छथि। एखनहु ई चिन्तनीय विषय अछि। मिथिलाक्षरक अवनति सँ मैथिल संस्कृतिक क्षरण भेल अछि। मिथिलाक्षरक संरक्षण सँ मैथिल संस्कृतिक संरक्षणक बाट प्रशस्त होएत।

सरकारी प्रयास

भारत सरकार द्वारा सन् 2003 मे मैथिली भाषाकँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कयल गेल। दू बरख पहिने भारत-सरकार मिथिलाक्षर-लिपिकँ विकास, संरक्षण, संवर्द्धनक वास्ते चारि सदस्यीय कमिटीक (सदस्यगण- डॉ. शशिनाथ झा, डॉ. रत्नेश्वर मिश्रा, श्री भवनाथ झा आ श्री रमण झा) गठन कयने छल जे अपन रिपोर्ट भारत-सरकार कँ दऽ देलक। एहि रिपोर्टक आधार पर सरकार किछु महत्वपूर्ण निर्णय लेलनि। यथा-(1) दरभंगा मे पांडुलिपि केन्द्रक स्थापना (2) यूनिकोड संबंधी काजक शीघ्र संपादन (3) मिथिलाक्षर लिपि कँ पढ़बैक वास्ते ऑडियो-वीडियो सामग्री तैयार केनाइ। एहि कमिटीक तत्वावधान मे C-DAC, तिरहुता कँ नाम सँ, मिथिलाक्षरक फॉण्ट बनेलक मुदा एखन तक इ फॉण्ट प्रचलन में नहिं आयल अछि। एकर अतिरिक्त केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) आठम वर्ग धरि मैथिली भाषाक अध्ययन-अध्यापनक मान्यता देने अछि, राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) कँ परीक्षा मैथिली विषय सँ सेहो भऽ रहल अछि। संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में मैथिली भाषाकँ माध्यम सँ अभ्यर्थीगण सफल भऽ रहल छथि।

निजी प्रयास

जेना कि सर्वविदित अछि जे मैथिली भाषा संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल अछि मुदा नहि जानि कोन कारणवश मैथिली भाषाक लेल प्रयोग होमय बला लिपिमे देवनागरी लिपिक मान्यता देल गेल, नै कि मिथिलाक्षर लिपिकँ। ई हम सब मैथिलक

वास्ते बहुत दुर्भाग्यपूर्ण अछि। यदि हम सभ मैथिलगण ठानि ली तऽ ई काज हम सभ कऽ सकैत छी। एखन मिथिलाक्षर लिपिक 7-8 तरहक फॉण्ट इण्टरनेट पर उपलब्ध अछि मुदा एकहुटा फॉण्ट खूब नीक सँ शुद्धतापूर्वक कम्प्यूटर आ मोबाइल पर काज नहि कऽ रहल अछि। मिथिलाक्षर-लिपिक शुद्ध फॉण्टकेँ विकसित करवामे बहुतो गोटे लागल छथि, एहि दिशामे आदरणीय श्री विनय झाक नाम अग्रगण्य अछि। ओ एहन तरहक फॉण्ट बनौलनि जाहि सँ मोबाइल आ कम्प्यूटर मे मिथिलाक्षर मे टंकण कयल जा सकय। नेपाल में सेहो मिथिलाक्षर लिपिके फॉण्ट पर काज भेल अछि। अमेरिकामे रहनिहार डॉ. (श्री) अंशुमान पाण्डेय सेहो एहि संबंधमे महत्वपूर्ण काज कयने छथि आ मिथिलाक्षर लिपि केँ कोडिंग करैक हेतु अपन समग्र रिपोर्ट अंतर्राष्ट्रीय संस्था International Consortium of Unicode केँ सन् 2011मे देने छलाह। डॉ. अंशुमान पाण्डेय अपन शोधपत्रमे कहने छथि –

"Although Tirhuta is an independent script, several of its characters bear resemblance to those of Bengali. These include the shapes of some consonants, vowels, and vowel signs. These similarities, however, are superficial. The actual differences are visible in the behaviors of characters in certain environments, such as consonant & vowel combinations and in consonant conjuncts, that are common in standard Tirhuta orthography. Despite the similarities between the two scripts, Tirhuta cannot be unified with Bengali. In fact, some orthographic features of Tirhuta prevent mutual intelligibility with Bengali. Proper representation of Tirhuta in plain & tent requires the preservation of its distinct rendering behaviors. This can only be accomplished at the character level, through character content that is independent of font changes, alterations to tent styles, or other formatting."

(यद्यपि तिरहुता एक अलग आ स्वतंत्र लिपि अछि, तथापि एकरा आओर बांग्ला लिपि कें मध्य किछु समानता यथा किछु स्वर, किछु व्यंजन आओर किछु स्वर चिन्ह मे बुझाइत अछि। परंच ई समरूपता मात्र बाह्य थीक। दुनू केँ बीचक अंतर तिरहुता केँ अक्षर/लिपि केँ स्वभाव जेना:- स्वर-व्यंजन समायोजन, व्यंजन समुच्च्य आओर तिरहुता वर्ण-विन्यास मे सामान्य रूप मे दृष्टिगोचर अछि । बांग्ला आओर तिरहुता लिपिक बीच किछु बाहरी समानता प्रतीत हेबाक बावजूदो, दुनु मे एक संग जोड़नाइ ठीक नहि अछि, बल्कि वस्तुत: रूप सँ तिरहुता वर्ण-विन्यासक किछु अपन विशेष लक्षण, बांग्ला लिपि संग एकर समानता देखवा सँ बाधित करैत अछि। सामान्य स्वरूप मे तिरहुता लिपि कें

उचित प्रतिनिधित्व/ पहिचान हेतु, ई परम आवश्यक अछि जे, तिरहुता लिपि के प्रस्तुत करबाक अपन तरीका जे पृथक आ अक्षुण्ण अछि, कँ उचित संरक्षण आ रखरखाव होइ। आओर एकर प्राप्ति एकर लिपि/अक्षर स्तर सँ ही भऽ सकैत अछि जे फॉण्ट, लेखन शैली, फारमैटिंग आदि सँ स्वतंत्र अछि।)

श्रीमान अंशुमान पांडेय जी कँ मिथिलाक्षर लिपि कँ प्रति ई दृष्टिकोण हम सब मैथिलक हेतु अनुकरणीय अछि। हुनकर एहि तथ्य पर विचार करैत यदि हम सब मैथिलजन ठानि ली तऽ मैथिली आ मिथिलाक्षर लिपि पुनः अपन प्रतिष्ठित स्थान लऽ सकैत अछि।

।। जय मिथिला जय मैथिली।।

हरि मोहन झा
भंडारिसम (भगवती वाणेश्वरी स्थान)
मनीगाछी, दरभंगा-847422

पाठकवृंदकेँ नाम संदेश

मिथिलाक्षर लिपिक पाठ्यपुस्तक लगभग अनुपलब्ध अछि। जाहिकारण मैथिलवृन्द मिथिलाक्षर लिपि सीखै के जिज्ञासु रहितो नहि सीखि पावैत छथि। एहि समस्याकेँ ध्यान में रखैत प्रस्तुत पोथीक पहिल संस्करणक प्रकाशन जून, 2019मे कयल गेल छल। एहि संबंध में विस्तृत विवरण पहिनहि देल जा चुकल अछि। एहि पोथीक दोसर संस्करणक प्रमुख विशेषता अधोलिखित अछि–

- ई पोथी शिक्षाक नवीन प्रणालीक अनुसरण करैत तैयार कएल गेल अछि।
- सब वर्णमे सबटा मात्रा लगा कऽ बताओल गेल अछि।
- संयुक्ताक्षर आ मात्रायुक्त संयुक्ताक्षरक अधिकाधिक प्रयोग अछि।
- लगभग सब वर्णक, मात्रायुक्त वर्ण/अक्षर, संयुक्ताक्षर आ मात्रायुक्त संयुक्ताक्षरक वैकल्पिक रुप सँग अभ्यास सेहो देल गेल अछि।
- संयुक्ताक्षर सँग मात्रा (उकार आ ऊकार) कोना लगाओल जाय तकर विस्तृत जानकारी देल गेल अछि जाहिसँ मिथिलाक्षर लिपि सुगमतासँ सीखल जा सकैत अछि।
- तीन वा चारि वर्णक संयोग सँ बनल संयुक्ताक्षर पर्याप्त संख्यामे देल अछि।
- एहि पोथीमे दुनू लिपिक (देवनागरी आ मिथिलाक्षर) प्रयोग कएल गेल अछि जाहि सँ मैथिलवृंद मिथिलाक्षर लिपि सहजतासँ सीख सकैत छथि।

यदि अभ्यर्थीगण पोथीमे देल अभ्यास कँ आत्मसात कऽ लथि तऽ मिथिलाक्षर लेखनमे दक्षता शीघ्र प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

यद्यपि एहि पोथीकेँ त्रुटिहीन रखबाक पूरा प्रयास कएल गेल अछि तथापि यदि कुनो त्रुटि रहि गेल होइ तऽ पाठकवृन्दक सुझाव सादर आमंत्रित अछि।

स्वर वर्ण

अ अनरनेवा	𑒁 𑒁	 𑒁𑒢𑒩𑒢𑒹𑒫𑒰
आ आम	𑒂 𑒂	 𑒂𑒧
इ इनार	𑒃	 𑒃𑒢𑒰𑒩
ई ईश्वर	𑒄	 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩
उ उल्लू	𑒅 𑒅𑒿 𑒅	 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒴

ऊ ऊन	𑒈 𑒈 𑒈	𑒈𑒢
ऋ ऋषि	𑒉 𑒉 𑒉	𑒉𑒭𑒱
ॠ 𑒊 𑒊 𑒊	ऌ 𑒋	ॡ 𑒌
ए एक	𑒏 𑒏	𑒏𑒑
ऐ ऐहब	𑒐 𑒐	𑒐𑒯𑒥

ओ ओछाओन	𑒍	 𑒍𑒕𑒰𑒍𑒢
औ औरा	𑒎	 𑒎𑒩𑒰
अं अंगूर	𑒁𑓀 𑒁𑓀	 𑒁𑓀𑒑𑒴𑒩
अः	𑒁𑓁 𑒁𑓁	

एखन धरि अहाँ लोकनि स्वर वर्ण सीखलहुँ। एकर नियमित अभ्याससँ अक्षरक लिखावट निश्चित रूपसँ निखरत। सभ वर्णकेँ कमसँ कम दस बेर अभ्यास जरूर करी। आगाँ हमरा लोकनि व्यंजन वर्ण सीखब।

व्यंजन वर्ण (कवर्ग)

क ककबा	क	 ककरॉ
ख खोंता	ख	 खोंता
ग गाछ	ग	 गाछ
घ घैल	घ	 घैन
ङ	ঙ ঙ	

व्यंजन वर्ण (चवर्ग)

च चरखा	𑒔 𑒔	 𑒔𑒩𑒎𑒰
छ छत्ता	𑒕 𑒕 𑒕	 𑒕𑒞𑓂𑒞𑒰
ज जहाज	𑒖	 𑒖𑒯𑒰𑒖
झ झंडा	𑒗	 𑒗𑓀𑒛𑒰
ञ	𑒘	

व्यंजन वर्ण (टवर्ग)

ट टमाटर	𑒙 𑒙	 𑒙𑒧𑒰𑒙𑒩
ठ ठेला	𑒚 𑒚	 𑒚𑒹𑒪𑒰
ड डोल	𑒛 𑒛	 𑒛𑒼𑒪
ढ ढोलक	𑒜	 𑒜𑒼𑒪𑒏
ण वाण	𑒝 𑒝 𑒝	 𑒫𑒰𑒝

व्यंजन वर्ण (तवर्ग)

त तराजू	𑒞	 𑒞𑒩𑒰𑒖𑒴
थ थरमस	𑒟	 𑒟𑒩𑒧𑒮
द दमकल	𑒠	 𑒠𑒧𑒏𑒪
ध धान	𑒡	 𑒡𑒰𑒢
न नाक	𑒢	 𑒢𑒰𑒏

व्यंजन वर्ण (पवर्ग)

प पायस	𑒣 𑒣	 𑒣𑒰𑒨𑒮
फ फतिंगा	𑒤	 𑒤𑒞𑒱𑓀𑒑𑒰
ब बकरी	𑒥	 𑒥𑒏𑒩𑒲
भ भाला	𑒦	 𑒦𑒰𑒪𑒰
म माछ	𑒧	 𑒧𑒰𑒕

अंतस्थ व्यंजन वर्ण

य यज्ञ	𑒨	 𑒨𑒖𑓂𑒘
र रानी	𑒩	 𑒩𑒰𑒢𑒲
ल लोटा	𑒪	 𑒪𑒼𑒙𑒰
व वर	𑒫	 𑒫𑒩
श शॉल	𑒬	 𑒬𑒰𑓀𑒪

ष षष्टदल	ষ	 ষষ্ঠদল
स सरौता	স	 সরৌতা
ह हाथी	হ ২	 হাথী
क्ष क्षत्रिय	ক্ষ	 ক্ষত্রিয়
त्र त्रिशूल	ত্র	 ত্রিশূল
ज्ञ ज्ञानी	জ্ঞ	 জ্ঞানী

मात्रा रहित शब्द आ वाक्य

अभ्यास

मिथिलाक्षरमे लिखू-

दू, तीन व चारि वर्णक मात्रा रहित सरल शब्द-

एक, फल, जल, आम, ईश, धन, घर, मन, तन, जन, थल, पर, नभ, सम, शत, हर, चल, घट, पथ, झट, भर, रथ, चढ़, बस, मत, खल, कर, सठ, तम, कम, जप, सभ, रख, हम, आन, डर, छल, वश, रस, नख, चर, पत्र, यज्ञ, ठग, बक, खत।

कमल, रमण, बहन, अमन, आलस, चमन, अक्षर, अक्षत, समझ, ठहर, कहर, सरल, नमन, उधर, सतत, डगर, नहर, सफर, फसल, भरत, परम, अक्षय, सक्षम, चलह, झलक, तपन, नगद, महक, यमन, पलट, नयन, समय, गमक, चरण, आरत, यवन, दलन, मदन, सत्रह।

कटहर, अनकर, झटपट, कचकच, पटपट, चटपट, फटफट, छमछम, अनलक, नटखट, थरमस, दमकल, कटलक, भरलक, चतरल, बमकत, खएलक, दशरथ, कसरत, झरकल, मतलब, जनतब, परतर, समटब, समतल, एतबय।

मात्रा रहित सरल वाक्य-

हमर कहल करह।
एमहर आबह, झट चलह।
रमण कहलक, घर चल।
नटखट छल हमर बचपन।
समर! कखन अएलह?
भगवन! कखन हरब हमर घरक कलह?
ककर कहल करब?
फसल उपजल।
ईश भजन करह।
अजय आम अनलक।
ओमहर जाउ।
पनघट पर चल।

मात्राक ज्ञान

एखन धरि अहाँ लोकनि सभ स्वर आ व्यंजन वर्ण पूर्ण रूपसँ सीख लेने होयब आ मात्रारहित शब्द आ वाक्यक अभ्यास सेहो क' लेने होयब। आब हमरा लोकनि वर्ण/अक्षरक सँग मात्रा लगेनाइ सीखब।

'आ' कँ मात्रा

देवनागरी जकाँ कोनो अक्षरक आगाँ ा लगा क' आकारक बोध होइत अछि। जेना-

काज (काज) कान (कान) नाम (नाम) दाग (दाग)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

आसान, काटल, टावर, खाना, जागल, भात, लात, माछ, गाना, काका, बाबा, लालच, पाग, सार, रचना, गमाएब, पाओल, अपराध, जान, पान, नारायण, महाकाल, नाश, नाथ, नान, मामा, लाबा, बाछा, फाटल, राम, राजा, कनकाभ, दरार, ताज, भला, बाजा, अज्ञातवास, इरा।

'इ' कँ मात्रा

देवनागरी जकाँ कोनो अक्षरक पाछाँ ि लगा क' इकारक बोध होइत अछि। जेना-

मित्र (मित्र) पिता (पिता) दिन (दिन) हरि (हरि)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

धिया, सिया, तिलबा, मणि, अमित, विभव, विलक्षण, आदि, विधि, नमामि, कथित, निकाम, गिलास, फिजा, बिहार, हरियाणा, परिधान, गिरिवर, दिलावर, नियम, परिधि, राधिका, मदिरा, पवित्र

'ई' केँ मात्रा

देवनागरी जकाँ कोनो अक्षरक आगाँ   लगा क' ईकारक बोध होइत अछि। जेना-

 (सीता)   (दही)   (नीम)   (सीथ)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

भीतर, पीयर, दीदी, गीत, पीसल, अंताक्षरी, धरणी, तीमन, कीचक, रीत, आरती, शीशी, भवानी, बालाजी, काली, बाली, नीक, लीची, पदाधिकारी, जिनगी, सीमा, नदी, अवधी, दिलीप, बेसी, यात्री, शील, बेटी, अविनाशी।

'उ' केँ मात्रा

मिथिलाक्षरमे उकार दू तरहें लगाओल जाइत अछि। वर्णक नीचाँ

अथवा   लगेलासँ उकारक बोध होइछ।

जेना-   (थु)   (ठु)   (चु)   (नु)   (पु)

किछु वर्णक सँग उकारक मात्रा लगेलाक बाद ओकर स्वरूपमे परिवर्तन सेहो देखल जाइत अछि। जेना-

 (कु)   (णु)   (तु)   (धु)   (भु)

 (रु)   (षु)   (हु)   (त्रु)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

कुमकुम, खुदा, गुदरी, घुमनाइ, चुमाओन, जुट, झुनझुन, डुबकी, तुषार, दुलारी, भानु, नुमाईश, पुदीना, बुरबक, भुसबा, मुरली, लुकमान, भाबुक, अंशुमान, सुविचार, हुनकर, सुधा, चतुर, मुदा, सुनयना, पुरान, मुखिया, घुमब, फुसिए, आशुलिपि, त्रुटि, सुरा, सुधा, रुमाल, हरषु, धुरी।

'ऊ' कँ मात्रा

सामान्यत: वर्णक नीचाँ ू लगेलासँ ऊकारक बोध होइछ। जेना-

पू (पू) फू (फू) नू (नू) मू (मू)

मुदा किछु वर्णक सँग ऊकारक मात्रा विभिन्न तरहें लगाओल जाइत अछि। विस्तृत उदारहरण आगू ककहरा मे भेटत।

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

जून, दूर, दुनू, तूर, भूप, आहूत, नूर, कूर, चकनाचूर, धुमसूर, भूमि, पतरातू, तराजू, सपाटू, आलू, भालू, धूप, भूख, नूर।

'ऋ' कार कँ मात्रा

कोनो वर्णक नीचाँ ृ लगा क' ऋकारक बोध कराओल जाइत अछि। ई मात्रा लगभग सभ वर्णमे एक तरहें लगाओल जाइत अछि। जेना-

गृ (गृ) घृ (घृ) घृ (घृ)

मुदा किछु वर्ण एहनो अछि जाहिमे ऋकार लगेलाक बाद ओकर रूप परिवर्तन भ' जाइत अछि। जेना- क्र (कृ) तृ (तृ)

दृ (दृ) बृ (बृ) भृ (भृ) हृ (हृ)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

कृपा, दृग, घृणा, नृप, भृकुटी, मृग, वृहत, अमृत, कृत, नृग, तृषा, भृगु, मृदा, मातृभूमि, कृतज्ञ, घृत, मृत, गृहिणी।

'ए' कँ मात्रा

एकारक मात्रा वर्णक पाछाँ ে लगाओल जाइत अछि।

जेना- থে (थे) ফে (फे) ৱে (वे) সে (से)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

केरा, बेला, सेर, खेल, पेठा गेल, बेल, बेस, पेटी, जेबी, चेतन, सेवा, रेत, खेत, तगेदा, सपेरा, सनेस, अलबेला, केबार, नेबार, जेबार, थेथर।

'ऐ' कँ मात्रा

ऐकारक मात्रा वर्णक पाछाँ ে तथा ऊपर ৈ लगाओल जाइत अछि। जेना-

থৈ (थै) দৈ (दै) লৈ (लै) হৈ (है)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

खैनी, थैला, तैयार, पैगाम, नैहर, शैलसुता, चैत, वैशाख, अबैत, देखैत, कैलाश, धैवत, दैव

'ओ' तथा 'औ' कँ मात्रा

'ए' आओर 'ऐ' कँ मात्राक सँग 'आ' कँ मात্রা लगेलासँ क्रमशः ओ तथा औ मात्राक बोध कराओल जाइत अछि। ো ৌ

जेना- ঠো (ठो) ঝো (झो) তৌ (तौ) ভৌ (भौ)

अभ्यास हेतु किछु शब्द-

पोती, ओलती, कोयल, बोली, भोलानाथ, ओठगन, मनोरमा, धोती, रोटी, करकोटि, ओमहर, ओसारा, ओम, ओस, ओहिठाम, कौआ, नौआ, चौकी, पौती, तौनी, बौआ, भौजी, औकात, औसत, औजार, औषधि।

'अं' आओर 'अः' कें मात्रा

अनुस्वार तथा विसर्गक प्रयोगसँ क्रमशः अं तथा अः कँ मात्रा लगाओल जाइत अछि। मुदा विसर्गक प्रयोग तीन प्रकारक देखल जाइत अछि। जेना–

अभ्यास हेतु किछु शब्द–

अंगूर, अंशुमान, अंजलि, अंकित, अंसारी, अंजीर, अंकलेश्वर, कंचन, गंगा, तिरंगा, वंश, रंश, टंकन, कुंठित, रंजीत, सारंगा, दुःख, पुनः, दुःशासन, नमः, रामः, पितुः

मिथिलाक्षरक विशेष अक्षर आ चिन्ह

विशेष जानकारी

- मिथिलाक्षरमे अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, चंद्रबिन्दु आ हलन्तक प्रयोग देवनागरी जकाँ होइत अछि।
- मिथिलाक्षरमे वर्ण आ चिन्हक कुल संख्याः
  स्वर वर्ण : 14, व्यंजन वर्ण : 33, स्वर चिन्ह : 15,
  विराम चिन्ह : 3, विशेष चिन्ह : 2

ककहरा

क क	का का	कि कि	की की	कु कु	कू कू
के के	कै कै	को को	कौ कौ	कं कं	कः कः
ख ख	खा खा	खि खि	खी खी	खु खु	खू खू
खे खे	खै खै	खो खो	खौ खौ	खं खं	खः खः
ग ग	गा गा	गि गि	गी गी	गु गु	गू गू
गे गे	गै गै	गो गो	गौ गौ	गं गं	गः गः
घ घ	घा घा	घि घि	घी घी	घु घु	घू घू
घे घे	घै घै	घो घो	घौ घौ	घं घं	घः घः

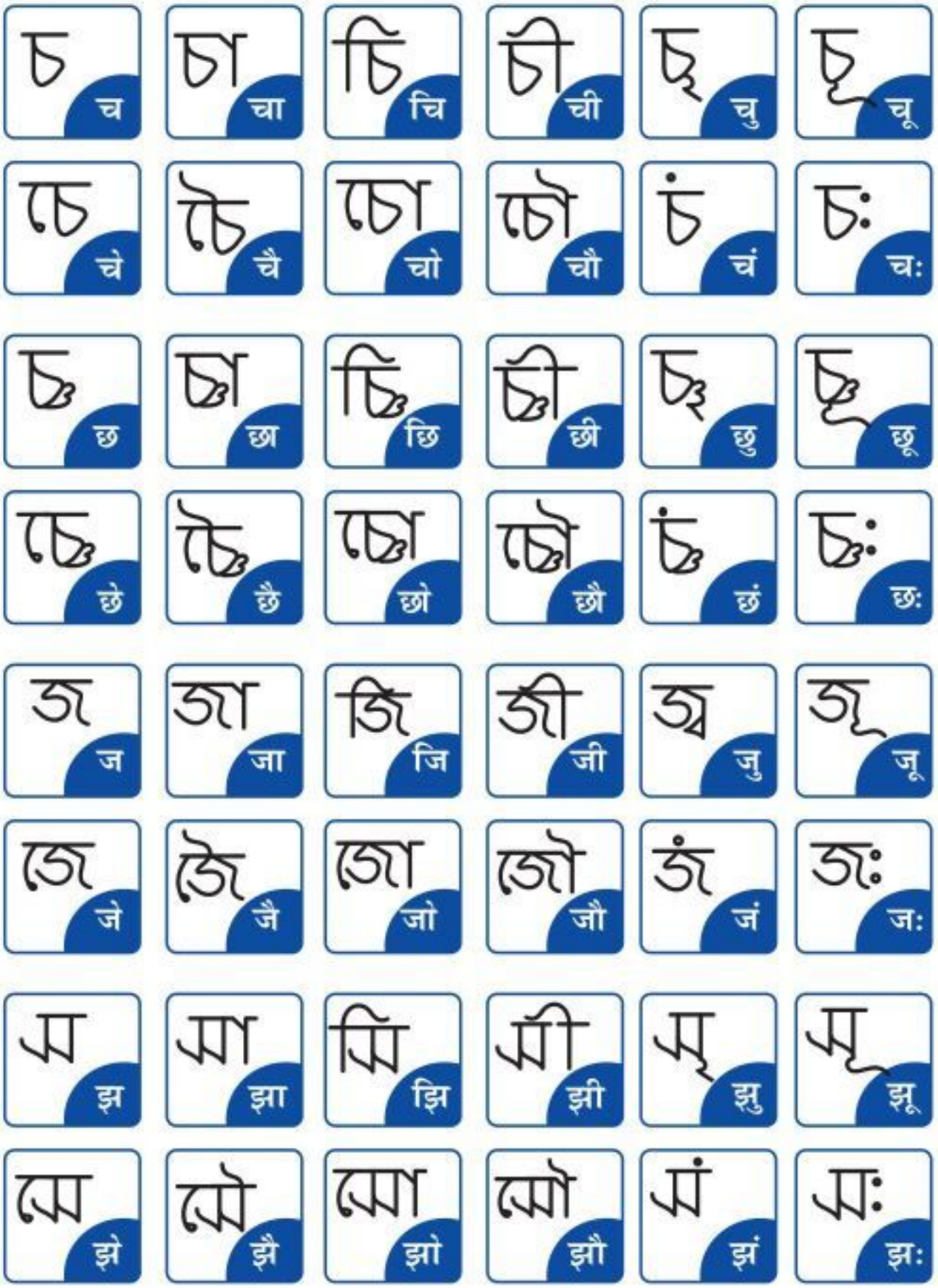
च च
चा चा
चि चि
ची ची
चु चु
चू चू
चे चे
चै चै
चो चो
चौ चौ
चं चं
चः चः
छ छ
छा छा
छि छि
छी छी
छु छु
छू छू
छे छे
छै छै
छो छो
छौ छौ
छं छं
छः छः
ज ज
जा जा
जि जि
जी जी
जु जु
जू जू
जे जे
जै जै
जो जो
जौ जौ
जं जं
जः जः
झ झ
झा झा
झि झि
झी झी
झु झु
झू झू
झे झे
झै झै
झो झो
झौ झौ
झं झं
झः झः

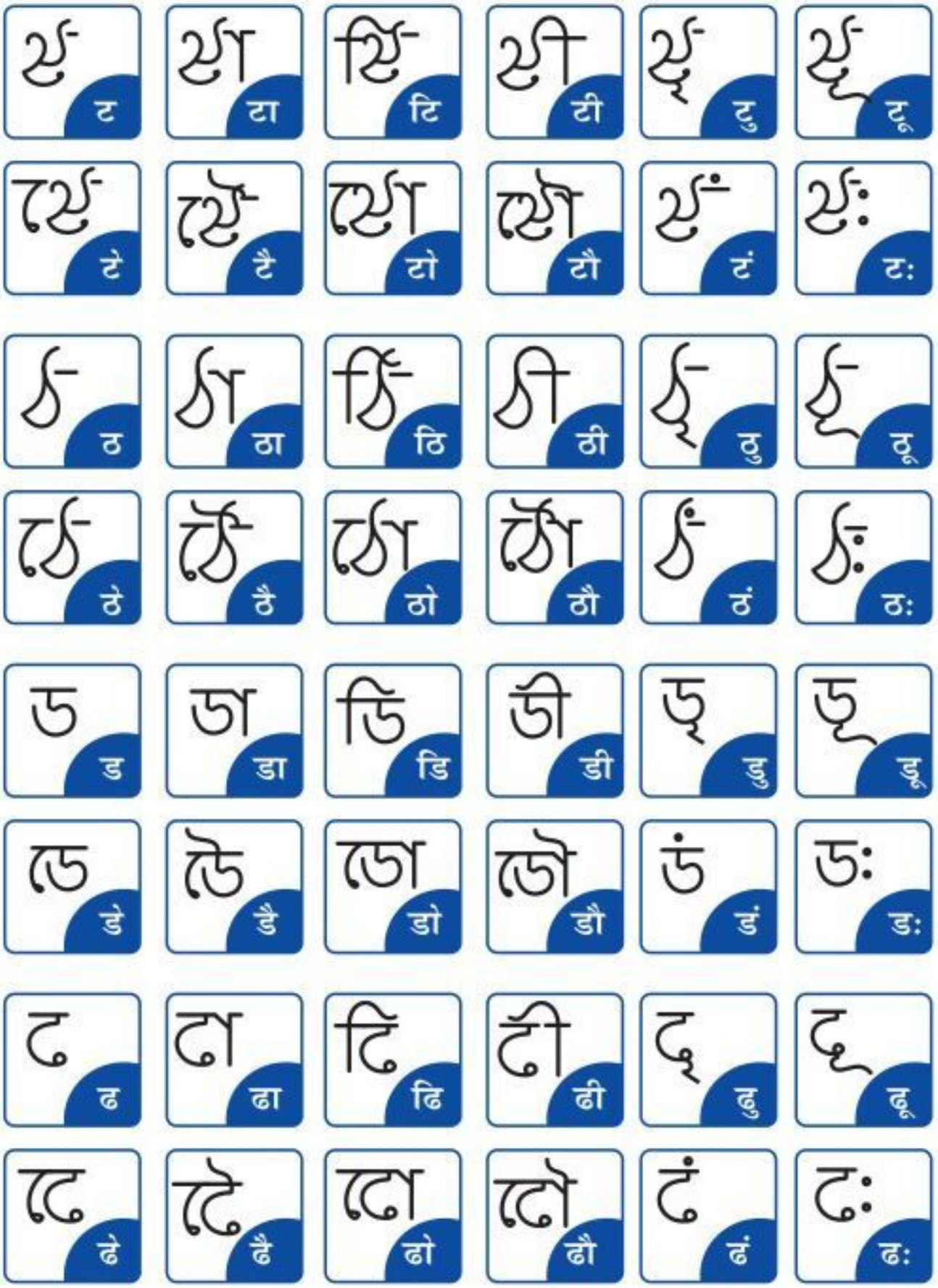
ट
टा
टि
टी
टु
टू
टे
टै
टो
टौ
टं
टः
ठ
ठा
ठि
ठी
ठु
ठू
ठे
ठै
ठो
ठौ
ठं
ठः
ड
डा
डि
डी
डु
डू
डे
डै
डो
डौ
डं
डः
ढ
ढा
ढि
ढी
ढु
ढू
ढे
ढै
ढो
ढौ
ढं
ढः

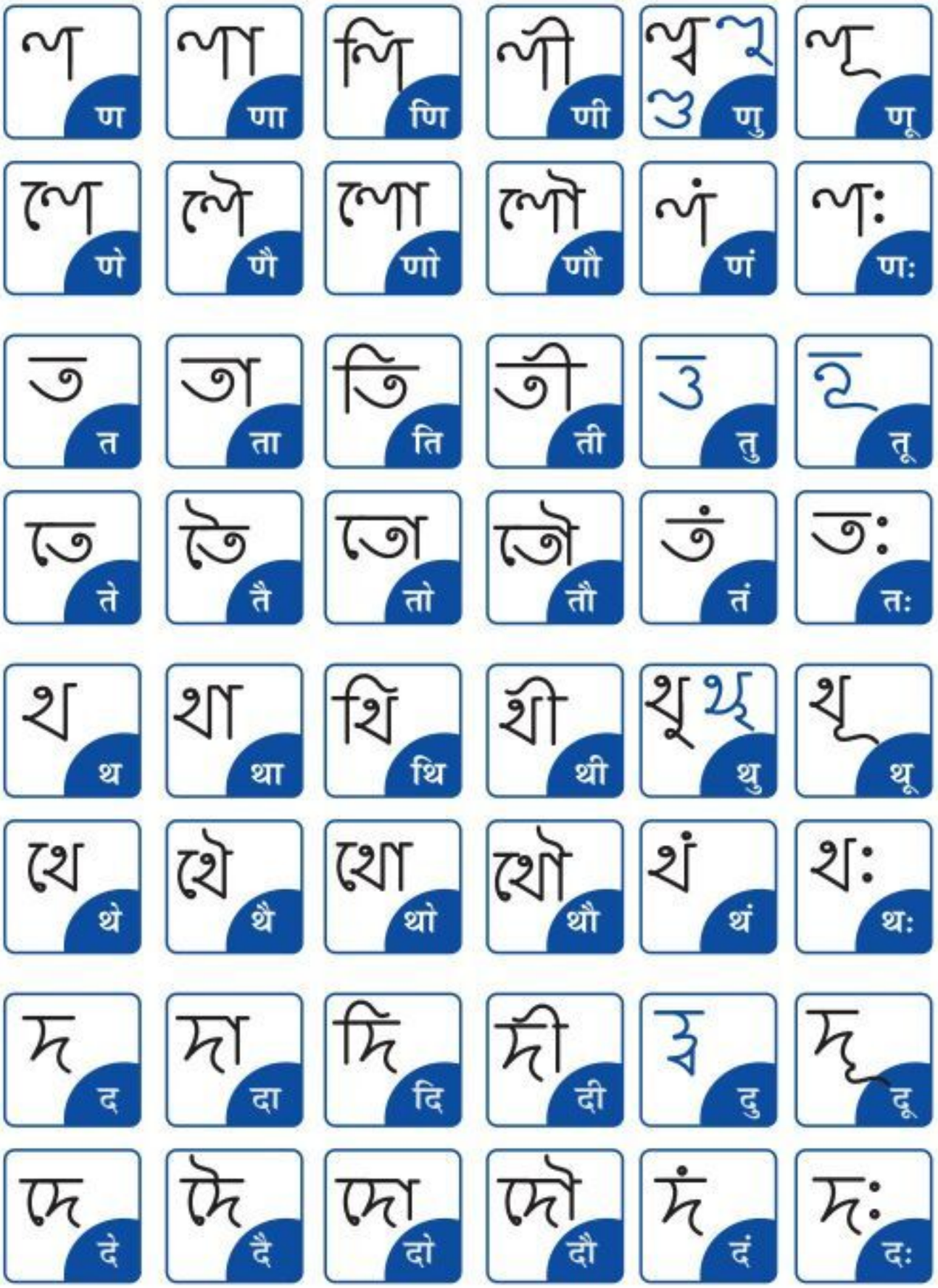
ণ ণ
ণা ণা
ণি ণি
ণী ণী
ণু ণু
ণূ ণূ
ণে ণে
ণৈ ণৈ
ণো ণো
ণৌ ণৌ
ণং ণং
ণঃ ণঃ
ত ত
তা তা
তি তি
তী তী
তু তু
তূ তূ
তে তে
তৈ তৈ
তো তো
তৌ তৌ
তং তং
তঃ তঃ
থ থ
থা থা
থি থি
থী থী
থু থু
থূ থূ
থে থে
থৈ থৈ
থো থো
থৌ থৌ
থং থং
থঃ থঃ
দ দ
দা দা
দি দি
দী দী
দু দু
দূ দূ
দে দে
দৈ দৈ
দো দো
দৌ দৌ
দং দং
দঃ দঃ

ধ ध
ধা धा
ধি धि
ধী धी
ধু धु
ধূ धू
ধে धे
ধৈ धै
ধো धो
ধৌ धौ
ধং धं
ধঃ धः
ন न
না ना
নি नि
নী नी
নু नु
নূ नू
নে ने
নৈ नै
নো नो
নৌ नौ
নং नं
নঃ नः
প प
পা पा
পি पि
পী पी
পু पु
পূ पू
পে पे
পৈ पै
পো पो
পৌ पौ
পং पं
পঃ पः
ফ फ
ফা फा
ফি फि
ফী फी
ফু फु
ফূ फू
ফে फे
ফৈ फै
ফো फो
ফৌ फौ
ফং फं
ফঃ फः

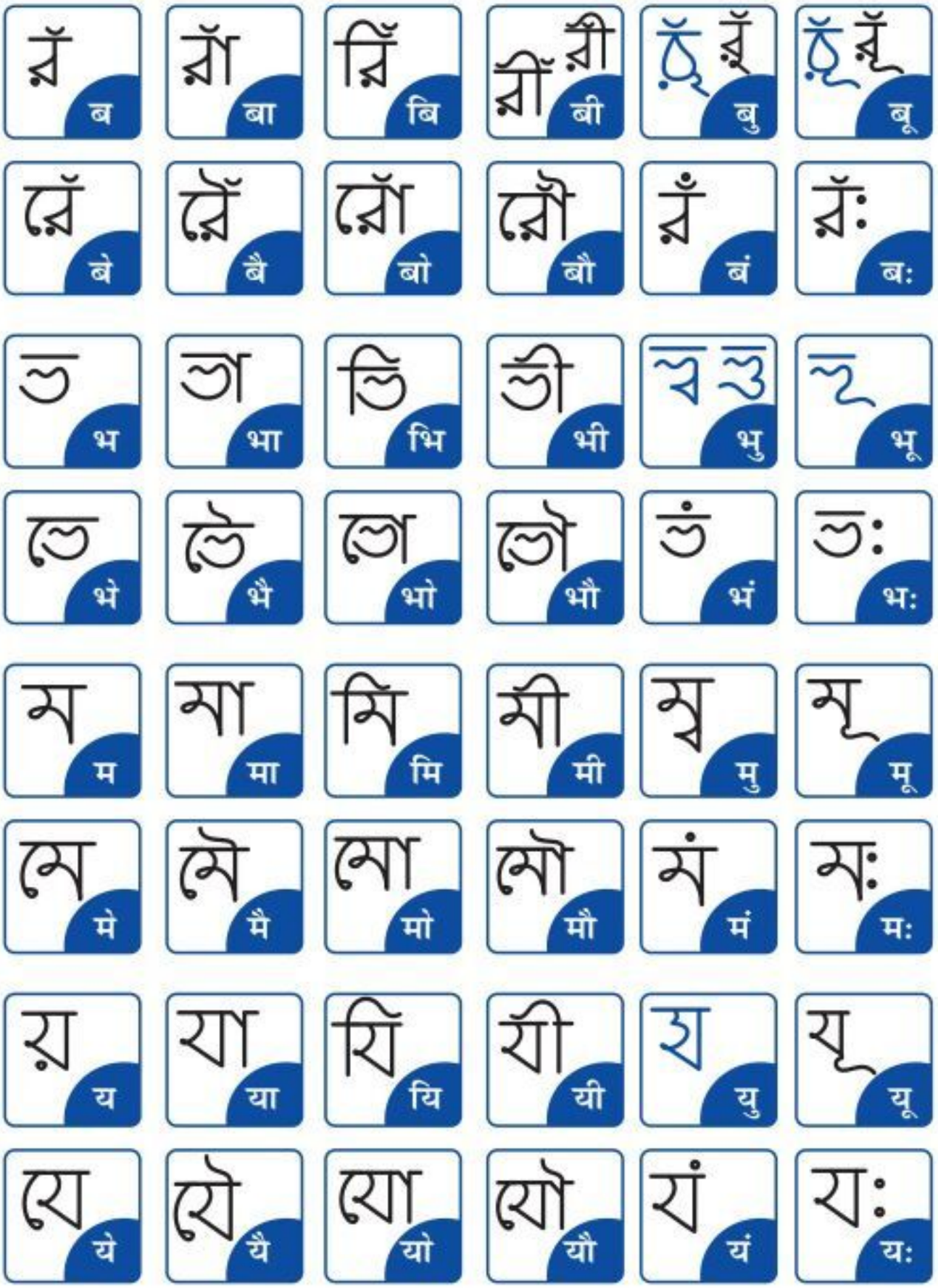
ब
बा
बि
बी
बु
बू
बे
बै
बो
बौ
बं
बः
भ
भा
भि
भी
भु
भू
भे
भै
भो
भौ
भं
भः
म
मा
मि
मी
मु
मू
मे
मै
मो
मौ
मं
मः
य
या
यि
यी
यु
यू
ये
यै
यो
यौ
यं
यः

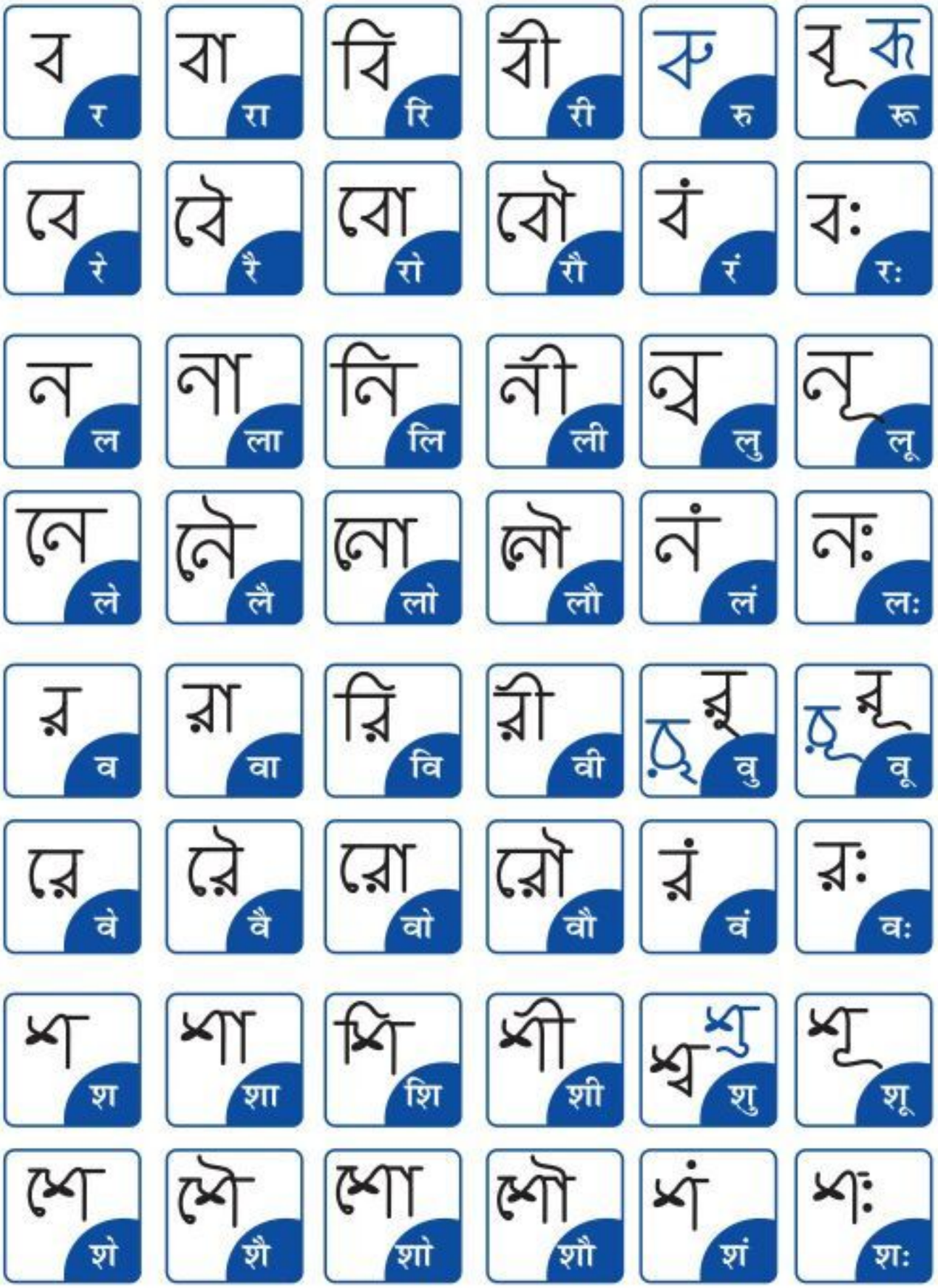
র র
রা রা
রি রি
রী রী
রু রু
রূ রূ
রে রে
রৈ রৈ
রো রো
রৌ রৌ
রং রং
রঃ রঃ
ল ল
লা লা
লি লি
লী লী
লু লু
লূ লূ
লে লে
লৈ লৈ
লো লো
লৌ লৌ
লং লং
লঃ লঃ
ৱ ব
ৱা বা
ৱি বি
ৱী বী
ৱু বু
ৱূ বূ
ৱে বে
ৱৈ বৈ
ৱো বো
ৱৌ বৌ
ৱং বং
ৱঃ বঃ
শ শ
শা শা
শি শি
শী শী
শু শু
শূ শূ
শে শে
শৈ শৈ
শো শো
শৌ শৌ
শং শং
শঃ শঃ

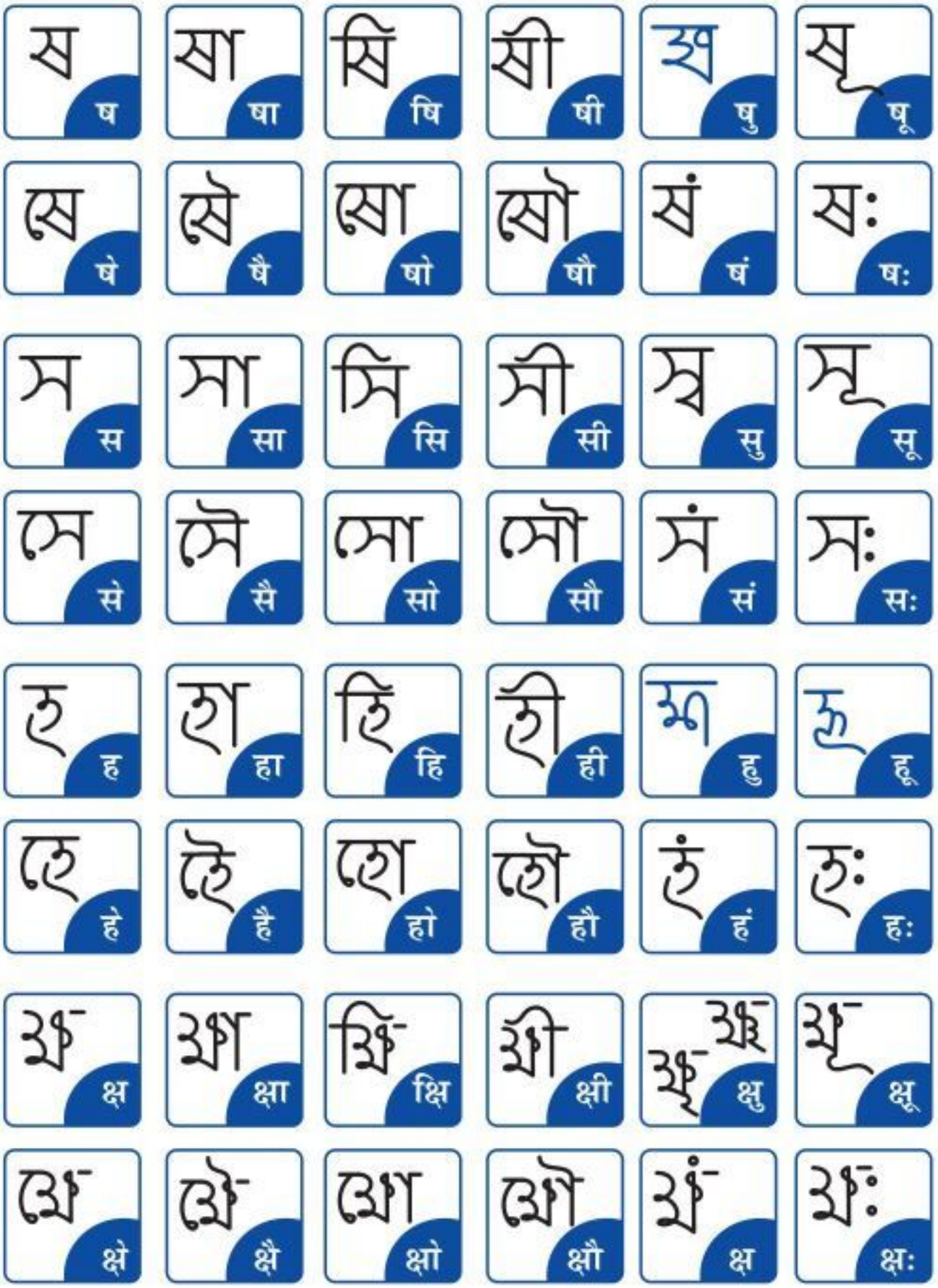

𑒭 ष	𑒭𑒰 षा	𑒭𑒱 षि	𑒭𑒲 षी	𑒭𑒳 षु	𑒭𑒴 षू
𑒭𑒹 षे	𑒭𑒻 षै	𑒭𑒼 षो	𑒭𑒾 षौ	𑒭𑓀 षं	𑒭𑓁 षः
𑒮 स	𑒮𑒰 सा	𑒮𑒱 सि	𑒮𑒲 सी	𑒮𑒳 सु	𑒮𑒴 सू
𑒮𑒹 से	𑒮𑒻 सै	𑒮𑒼 सो	𑒮𑒾 सौ	𑒮𑓀 सं	𑒮𑓁 सः
𑒯 ह	𑒯𑒰 हा	𑒯𑒱 हि	𑒯𑒲 ही	𑒯𑒳 हु	𑒯𑒴 हू
𑒯𑒹 हे	𑒯𑒻 है	𑒯𑒼 हो	𑒯𑒾 हौ	𑒯𑓀 हं	𑒯𑓁 हः
𑒏𑓂𑒭 क्ष	𑒏𑓂𑒭𑒰 क्षा	𑒏𑓂𑒭𑒱 क्षि	𑒏𑓂𑒭𑒲 क्षी	𑒏𑓂𑒭𑒳 क्षु	𑒏𑓂𑒭𑒴 क्षू
𑒏𑓂𑒭𑒹 क्षे	𑒏𑓂𑒭𑒻 क्षै	𑒏𑓂𑒭𑒼 क्षो	𑒏𑓂𑒭𑒾 क्षौ	𑒏𑓂𑒭𑓀 क्ष	𑒏𑓂𑒭𑓁 क्षः

नोट- 'य' वर्णमे मात्रा लगलाक उपरान्त नीचाँ बिन्दु नहि लागत मुदा कतौ-कतौ बिन्दुक सँग प्रयोग सेहो देखल जाइछ।

माँ जानकी वन्दना

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम्।।
सकलकुशलदात्रीं भुक्तिमुक्तिप्रदात्रीं
त्रिभुवनजनयित्रीं दुष्टधीनाशयित्रीम्।
जनकधरणिपुत्री दर्पिदर्पप्रहर्त्रीम्
हरिहरविधिकर्त्रीम् नौमि सद्भक्तिभर्त्रीम्।

मिथिलाक्षर/तिरहुतासँ संबंधित प्रमुख जानकारी

मिथिलाक्षरमे शब्दक ऊपर डाँढिक विशेष महत्व होइत अछि। एकर विशिष्टता सेहो कहि सकैत छी। जेना-

1. मिथिलाक्षरक वर्ण जाहि कँ ऊपर डाँढि नहि होईत अछि-

   ए, ऐ, ओ, औ

2. मिथिलाक्षर वर्ण जकर ऊपर सिर्फ दहिना कात डाँढि होइत अछि-

   अ, आ, इ, ई, अं, अः, ख, ग, ञ, ट, ठ, ण, थ, ध, प, श

3. बाँकी सभ वर्णक ऊपर डाँढ़ि होइत अछि मुदा किछुमे वर्णसँ सटल त' किछुमे हटल रहैत अछि। स्पष्टीकरण कँ लेल ककहरामे देखी।

4. आकार (ा), इकार (ि) आओर ईकार (ी) कँ प्रयोग देवनागरीक समान होइत अछि।

5. एकार (े), ऐकार (ै), ओकार (ो), औकार (ौ) कँ प्रयोगक तरीका एक तरहें अछि और तरीका विस्तार सँ ककहरामे बताओल गेल अछि।

6. उकार (ु) कँ प्रयोग मिथिलाक्षरमे तीन तरहें होइत अछि -

   ■ ख, घ, च, छ, झ, ट, ठ, थ, फ, ब, व, क्ष आदिमे 2 जकाँ आकृति लगाओल जाइत अछि।

   ■ ग, ज, द, न, प, म, ल, श, स आदिमे त्रिभुज जकाँ आकृति लगाओल जाइत अछि।

   ■ क, ण, त, ध, य, र, ष, ह, त्र आदि वर्णमे उकारक प्रयोग कयलासँ ओहि वर्णक रूप परिवर्तन भऽ जाइत अछि।

   ■ 'भ' आ 'ण' मे उकारक प्रयोग दू तरहें लगाओल जाइत अछि- एकटा त्रिभुज जकाँ दोसर मिथिलाक्षरक आधा 'भ' आ 'ण' मे क्रमशः देवनागरीक उकार जकाँ चिन्ह लागि जाइत अछि।

8. ऊकारक प्रयोग किछु वर्ण (त, ध, भ, ह) के छोड़ि बाँकी सभ वर्णक

संग एकहि तरीका सँ लगैत अछि।

9. ऋकारक प्रयोग किछु वर्ण के छोड़ि (क, त, द, भ, ह) बाँकी सब वर्णक संग देवनागरी लिपि जकाँ होइत अछि।

10. 'ब' आओर 'व' के रूप परिवर्तन च के रूपमे तखन होईत अछि जखन ह्रस्व अथवा दीर्घ उकारक मात्रा वा ऋकारक मात्रा लगैत अछि।

11. उपरोक्त सभ जानकारीक ककहरा मे देल गेल अछि।

सिद्धिरस्तु (पंजी0)

मिशन मिथिलाक्षर लिपि

ई-पाठशालाक माध्यमसँ

निःशुल्क मिथिलाक्षर सीखबाक निःशुल्क

लेल संपर्क करी।

9310475355 9971919826 9278888436

E-mail : siddhirastu.trust@gmail.com
www.siddhirastutrust.com

अंक लेखन

वैश्विक स्तर पर स्वीकारल गेल अंक लेखनसँ सभ कियो परिचित होयब। अंग्रेजी, हिन्दी आओर मिथिलाक्षर अंक लेखनक तुलनात्मक रूप ध्यानपूर्वक देखी आ अभ्यास करी। नियमित प्रयोग कएलासँ अपन मिथिलाक्षर अंक लेखन सेहो सर्वव्यापी भ' सकैत अछि।

अंग्रेजी	हिन्दी	मिथिलाक्षर	अंग्रेजी	हिन्दी	मिथिलाक्षर
1	१	১	11	११	১১
2	२	২	12	१२	১২
3	३	৩	13	१३	১৩
4	४	৪	14	१४	১৪
5	५	৯	15	१५	১৯
6	६	৬	16	१६	১৬
7	७	৭	17	१७	১৭
8	८	৮	18	१८	১৮
9	९	৯	19	१९	১৯
10	१०	১০	20	२०	২০

संयुक्ताक्षर प्रकरण

मिथिलाक्षर लिपिमे संयुक्ताक्षर देवनागरी लिपि जकाँ आसान नहिं अछि। देवनागरी लिपिमे पहिल अक्षरकँ आधामे दोसर अक्षर जुड़ि जाइत अछि मुदा मिथिलाक्षर लिपिमे बहुतो वर्णक संयुक्ताक्षरमे प्रयोग कएला पर ओकर रूपमे परिवर्तन भ' जाइत अछि। एहि लिपिमे लगभग सभ अक्षरकँ संयुक्ताक्षरमे किछु ने किछु अंतर रहैत अछि। मुदा निरंतर अभ्यास कएलासँ मिथिलाक्षर लिपिकँ संयुक्ताक्षर पढ़ै ओ लिखैमे सिद्धहस्त भ' जायब।

उम्मीद करैत छी जे जतेक संयुक्ताक्षरक उदहारण देल जा रहल अछि अहाँ लोकनि कँ तीव्र गतिसँ मिथिलाक्षर सिखबामे मदति भेटत।

कवर्गादि संयुक्ताक्षर

'क' सँ बनल संयुक्ताक्षर

क्क	𑒏𑓂𑒏	सक्कत	𑒮𑒏𑓂𑒏𑒞
क्न	𑒏𑓂𑒢	सक्नोति	𑒮𑒏𑓂𑒢𑒼𑒞𑒱
क्ल	𑒏𑓂𑒪	शुक्ल	𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪
क्त	𑒏𑓂𑒞	उपयुक्त	𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞
क्य	𑒏𑓂𑒨	चाणक्य	𑒔𑒰𑒝𑒏𑓂𑒨
क्ख	𑒏𑓂𑒐	मक्खन	𑒧𑒏𑓂𑒐𑒢
क्म	𑒏𑓂𑒧	रुक्मिणी	𑒩𑒳𑒏𑓂𑒧𑒱𑒝𑒲

क्व		परिपक्व	
क्र		क्रमांक	
क्स		अक्स	
क्श		प्राक्शिरा	
क्प			

'ख' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ख्त		सख्त	
ख्व		ख्वाब	
ख्य		सांख्य	
ख्र		ख्रीष्टाब्दी	
ख्म		जख्म	
ख्स		शख्स	

'ग' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ग्ग		लग्गा	

ग्घ	𑒑𑓂𑒒	लकड़बग्घा	𑒪𑒏𑒛𑓃𑒥𑒑𑓂𑒒𑒰
ग्द	𑒑𑓂𑒠	वाग्दान	𑒫𑒰𑒑𑓂𑒠𑒰𑒢
ग्ध	𑒑𑓂𑒡/𑒑𑓂𑒡	संदिग्ध	𑒮𑓀𑒠𑒱𑒑𑓂𑒡
ग्न	𑒑𑓂𑒢	संलग्न	𑒮𑓀𑒪𑒑𑓂𑒢
ग्म	𑒑𑓂𑒧	युग्म	𑒨𑒳𑒑𑓂𑒧
ग्य	𑒑𑓂𑒨/𑒑𑓂𑒨	वैराग्य	𑒫𑒻𑒩𑒰𑒑𑓂𑒨
ग्र	𑒑𑓂𑒩	ग्रहण	𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝
ग्ल	𑒑𑓂𑒪	ग्लानि	𑒑𑓂𑒪𑒰𑒢𑒱
ग्व	𑒑𑓂𑒫	ग्वाला	𑒑𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰

‘घ’ सँ बनल संयुक्ताक्षर

घ्घ	𑒒𑓂𑒒	बघ्घो	𑒥𑒒𑓂𑒒𑒼
घ्न	𑒒𑓂𑒢	विघ्न	𑒫𑒱𑒒𑓂𑒢
घ्य	𑒒𑓂𑒨	दुर्लंघ्य	𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑓀𑒒𑓂𑒨
घ्र	𑒒𑓂𑒩	घ्राण	𑒒𑓂𑒩𑒰𑒝

'ङ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ङ्क		रङ्क	
ङ्ख		शङ्ख	
ङ्ग		गङ्गा	
ङ्घ		सङ्घ	

नोट-आधुनिक लेखनीमे एहि संयुक्ताक्षरक जगह पर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइत अछि। जेना- गंगा, अंगा, पंख, अंक इत्यादि।

चवर्गादि संयुक्ताक्षर

'च' आ 'छ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

च्च		समुच्चय	
च्छ		अकच्छ	
च्य		च्यवन	

'ज' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ज्ज		बज्जर	
ज्झ		उज्झट	

ज्म		नज्म	
ज्य		साम्राज्य	
ज्र		वज्र	
ज्व		ज्वलन	

'ञ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ञ्च		परञ्च	
ञ्छ		पञ्छी	
ञ्ज		खञ्जर	
ञ्झ		झञ्झट	

नोट–आधुनिक लेखनीमे एहि संयुक्ताक्षरक स्थान पर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइत अछि। जेना– खंजर, पंछी, झंझट इत्यादि।

टवर्गादि संयुक्ताक्षर

'ट' आ 'ठ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ट्ट		खुट्टा	
ट्र		ट्रिगर	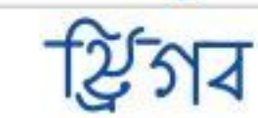

ट्य		अकाट्य	
ठ्ठ		मठ्ठा	
ठ्य		पाठ्य	

'ड', 'ढ' आ 'ण' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ड्ग		खड्ग	
ड्ड		बड्ड	
ड्र		ड्रामा	
ढ्य		धनाढ्य	
ण्ट		कण्टक	
ण्ठ		कण्ठ	
ण्ड		घमण्ड	
ण्ण		अक्षुण्ण	
ण्य		अरण्य	
ण्व		ण्व	

तवर्गादि संयुक्ताक्षर

'त' सँ बनल संयुक्ताक्षर

मिथिलाक्षरमे 'त हलन्त' साधारणतया दू तरहें लिखल जाइत अछि।

जेना-

मुदा जखन 'त' वर्ण कुनो व्यंजन वर्ण वा अन्तस्थ वर्णक संगे संयुक्त रूपमे लिखल जाइत अछि त' नीचाँ जकाँ लिखल जाइत अछि-

त्क		उत्कर्ष	
त्ख		उत्खनन	
त्थ		उत्थान	
त्न		यत्न	
त्प		उत्पल	
त्म		आत्मा	
त्ल		कत्ल	
त्स		उत्सर्ग	

'त' कँ किछु संयुक्ताक्षरक रूप परिवर्तित भ' जाइत अछि। जेना-

त्त		अगत्ती	

त्य		आदित्य	
त्र		परित्राण	
त्व		मातृत्व	

'थ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

थ्य		मिथ्या	
थ्र		थ्रेसर	
थ्व		पृथ्वी	

'द' सँ बनल संयुक्ताक्षर

द्ग		उद्गम	
द्घ		उद्घोषणा	
द्द		चौहद्दी	
द्ध		सिद्धार्थ	
द्भ		उद्भव	
द्म		पद्मा	

द्य		पद्य	
द्र		द्रौपदी	
द्व		द्वापर	

'ध' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ध्य		मध्य	
ध्र		आंध्र	
ध्व		ध्वनि	

'न' सँ बनल संयुक्ताक्षर

न्त		अन्त	
न्थ		मन्थन	
न्द		आनन्द	
न्ध		अन्धकार	
न्न		प्रसन्न	
न्म		जन्म	

न्य	ন্য	चैतन्य	চৈতন্য
न्व	ন্ব	अन्वेषक	অন্বেষক

पवर्गादि संयुक्ताक्षर

'प' आ 'फ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

प्त	প্ত	लिप्त	লিপ্ত
प्न	প্ন	स्वप्न	স্বপ্ন
प्प	প্প	गप्प	গপ্প
प्य	প্য	प्याज	প্যাজ
प्र	প্র	प्रहार	প্রহাব
प्ल	প্ল	प्लावन	প্লাবন
प्व	প্ব	प्वार	প্বাব
प्स	প্স	अप्सरा	অপ্সবা
फ्र	ফ্র	फ्रॉक	ফ্রাঁক
फ्ल	ফ্ল	फ्लोरिडा	ফ্লোবিডা

'ब' आ 'भ' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ब्ज		नब्ज	
ब्द		शब्द	
ब्ध		क्षुब्ध	
ब्ब		रब्बी	
ब्य		ब्याज	
ब्र		कब्र	
ब्ल		ब्लॉक	
ब्श		हब्शी	
भ्य		सभ्यता	
भ्र		भ्रमण	
भ्व		भ्वादि	

'म' सँ बनल संयुक्ताक्षर

म्न		निम्न	

म्प	𑒧𑓂𑒣 / 𑒧𑓂𑒣	चम्पा	𑒔𑒧𑓂𑒣𑒰
म्फ	𑒧𑓂𑒤	गुम्फन	𑒑𑒳𑒧𑓂𑒤𑒢
म्ब	𑒧𑓂𑒥	अम्बे	𑒁𑒧𑓂𑒥𑒹
म्भ	𑒧𑓂𑒦	कुम्भ	𑒏𑒳𑒧𑓂𑒦
म्म	𑒧𑓂𑒧	अम्मट	𑒁𑒧𑓂𑒧𑒙
म्य	𑒧𑓂𑒨	म्यान	𑒧𑓂𑒨𑒰𑒢
म्र	𑒧𑓂𑒩	ताम्रपत्र	𑒞𑒰𑒧𑓂𑒩𑒣𑒞𑓂𑒩
म्ल	𑒧𑓂𑒪	अम्ल	𑒁𑒧𑓂𑒪
म्व	𑒧𑓂𑒫	सम्वाद	𑒮𑒧𑓂𑒫𑒰𑒠
म्ह	𑒧𑓂𑒯 / 𑒧𑓂𑒯	कुम्हार	𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩

अन्तस्थादि संयुक्ताक्षर

‘य’ सँ बनल संयुक्ताक्षर

य्य	𑒨𑓂𑒨 / 𑒨𑓂𑒨	अय्याश	𑒁𑒨𑓂𑒨𑒰𑒬

अधिकांशतः अन्य वर्णक सँग ‘य’ संयुक्त होइत अछि। जेना– प्य, ख्य, क्य, त्य, भ्य, ष्य, ध्य, ब्य, ट्य आदि।

'र' सँ बनल संयुक्ताक्षर

र्म		मर्म	
र्ग		स्वर्ग	
र्क		कोणार्क	
र्प		दर्पण	

'ल' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ल्क		सिल्क	
ल्ख		तल्ख	
ल्त		सल्तनत	
ल्प		संकल्प	
ल्फ		गुल्फ	
ल्भ		प्रगल्भ	
ल्म		फिल्म	
ल्य		शाण्डिल्य	

ल्ल	ল্ল	गुल्लरि	গুল্লরি
ल्व	ল্ব	बिल्वपत्र	রিঁল্বপত্র

'व' सँ बनल संयुक्ताक्षर

व्य	ব্য	व्यवहार	ব্যবহার
व्र	ব্র	व्रत	ব্রত
व्ल	ব্ল	व्लादिमीर	ব্লাদিমীর
व्व	ব্ব	कव्वाली	কব্বালী
वृ	বৃ	वृहत	বৃহত

'श' सँ बनल संयुक्ताक्षर

श्क	শ্ক	इश्क	ইশ্ক
श्च	শ্চ	पश्चिम	পশ্চিম
श्छ	শ্ছ	निश्छल	নিশ্ছল
श्त	শ্ত	पुश्तैनी	পুশ্তৈনী
श्न	শ্ন	प्रश्न	প্রশ্ন

श्म		कश्मीर	
श्य		श्याम	
श्र		श्रावस्ती	
श्ल		अश्लील	
श्व		अश्व	
श्श		दुश्शासन	

'ष' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ष्क		दुष्कर्म	
ष्ट		अष्टादश	
ष्ठ		निष्ठा	
ष्ण		तृष्णा	
ष्प		पुष्प	
ष्म		ग्रीष्म	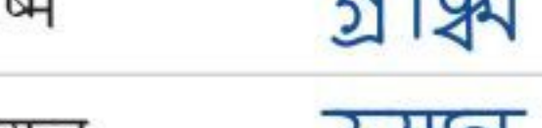
ष्य		दुष्यन्त	

ष्व	ষ্ব	तेष्वेव	তেষ্বেব

'स' सँ बनल संयुक्ताक्षर

स्क	স্ক	स्कन्द	স্কন্দ
स्ख	স্খ	स्खलन	স্খলন
स्त	স্ত	स्तरहीन	স্তরহীন
स्थ	স্থ	स्थापित	স্থাপিত
स्न	স্ন	स्नातक	স্নাতক
स्प	স্প	स्पंज	স্পংজ
स्फ	স্ফ	स्फूर्ति	স্ফূর্তি
स्म	স্ম	स्मारक	স্মাবক
स्य	স্য	स्याह	স্যাহ
स्र	স্র	स्रोत	স্রোত
स्ल	স্ল	नस्ल	নস্ল
स्व	স্ব	स्वागत	স্বাগত

स्स		खस्सी	

'ह' सँ बनल संयुक्ताक्षर

ह्ण	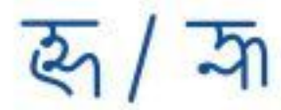	गृह्णातु	
ह्न		मध्याह्न	
ह्म		ब्रह्म	
ह्य		बाह्य	
ह्र		ह्रास	
ह्ल		आह्लादित	
ह्व		आह्वान	
ह्ह		ह्रदय	

मिथिलाक्षर/तिरहुतासँ संबंधित किछु जानकारी

1. मिथिलाक्षरमे संयुक्ताक्षरक प्रयोग बहुत गंभीर विषय अछि। देवनागरी लिपि जकाँ संयुक्ताक्षरक प्रयोग मिथिलाक्षर लिपिमे नहि होइत अछि। ताहि कारणे संयुक्ताक्षर प्रकरण, मिथिलाक्षरक सबसँ पैघ विषय अछि। निरंतर अभ्याससँ एहिमे दक्षता प्राप्त कयल जा सकैछ।
2. ब' आओर 'व' के रूप परिवर्तन च के रूप में तखन होईत अछि-
   - 'ब' सँ बनल दू वर्णक संयुक्ताक्षर लिखैत काल जेना-
     ब्ज, ब्द, ब्ध, ब्य, ब्र आदि।
   - व सँ बनल दू वर्णक संयुक्ताक्षर लिखैत काल जेना -व्य आ व्र।

तीन वा चारि वर्णक संयुक्ताक्षर

क्त्य (क्+त्+य)		शक्त्यु	
क्त्व (क्+त्+व)		भुक्त्वा	
क्त्र (क्+त्+र)		चतुर्वक्त्र	
क्त्र्य (क्+त्र्+य)		ङ्क्य (ङ्+क्+य)	
ङ्क्र (ङ्+क्+र)		सङ्क्रमण	
ङ्ख्य (ङ्+ख्+य)		साङ्ख्य	
ङ्ग्य (ङ्+ग्+य)		व्यङ्ग्य	
ङ्ग्र (ङ्+ग्+र)		सङ्ग्राम	
ङ्घ्र (ङ्+घ्+र)		अङ्घ्रि	
ङ्घ्य (ङ्+घ्+य)		दुर्लङ्घ्य	

च्छ्य (च्+छ्+य)		च्छ (च्+छ्+र)	
च्छृ (च्+छ्+ऋ)		तच्छृणुष्व	
च्छ्व (च्+छ्+व)		उच्छ्वास	
ण्ड्र (ण्+ड्+र)		पौण्ड्रक	
ण्ड्य (ण्+ड्+य)		पाण्ड्य	
ण्ड्व (ण्+ड्+व)		त्य (त्+त्+य)	
त्क्र (त्+क्+र)		उत्क्रम्य	
त्म्य (त्+म्+य)		तादात्म्य	
त्र्य (त्+र्+य)		त्र्यंबक	
र्त्य (त्+र्+य)		अमर्त्य	
त्स्य (त्+स्+य)		मत्स्य	

त्स्न (त्+स्+न)		कृत्स्न	
द्ध्य (द्+ध्+य)		सिद्ध्यति	
द्भ्र (द्+भ्+र)		उद्भ्रान्त	
द्ध्र्व (द्+ध्+र्+व)		उद्ध्र्वाधर	
न्त्र (न्+त्+र)		तन्त्र	
न्त्य (न्+त्+य)		अन्त्यज	
न्त्व (न्+त्+व)		पूर्वन्त्वा	
न्द्य (न्+द्+य)		अनिन्द्य	
न्ध्य (न्+ध्+य)		सन्ध्या	
ब्ध्व (ब्+ध्+व)		लब्ध्वा	
ब्ध्य (ब्+ध्+य)		म्र्य (म्+म्+र्+य)	

म्भ्य (म्+भ्+य)		श्च्य (श्+च्+य)	
ष्प्र (ष्+प्+र)		निष्प्राण	
ष्ट्र (ष्+ट्+र)		राष्ट्र	
स्त्य (स्+त्+य)		अगस्त्य	
स्त्र (स्+त्+र)		शास्त्र	
स्थ्य (स्+थ्+य)		स्वास्थ्य	
क्ष्य (क्ष्+य)		साक्ष्य	
क्ष्व (क्ष्+व)		इक्ष्वाकु	
क्ष्ण (क्ष्+ण)	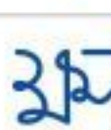	तीक्ष्ण	
क्ष्म (क्ष्+म)		लक्ष्मण	
ष्ठ्य (ष्+ठ्+य)		षष्ठ्या	

मात्रायुक्त आ अन्य संयुक्ताक्षर

मिथिलाक्षरमे ह्रस्व उकार छोड़ि बाँकी मात्राक प्रयोग संयुक्ताक्षरमे समान रूपसँ कएल जाइछ। तइयो किछु विविधताक कारणे एकर प्रयोग उदाहरणक संग आगू देखाएल जा रहल अछि। प्राय: एहि तरहक संयुक्ताक्षर अधिकतर संस्कृत भाषामे बेसी देखल जाइछ। एकर नियमित अभ्यास कएलासँ मिथिलाक्षर लिखब-पढ़ब आओर बेसी सुगम होयत।

क्कु	क्त्र	क्च	क्रु
क्तु	क्रच	ख्यु	ग्गु
ङ्कृ	ङ्क्त	ङ्कु	ङ्क्ष
ङ्गु	ङ्र्ग		

च्छु	च्यु	ज्ज्व	ज्ञ
𑒔𑓂𑒕𑒳	𑒔𑓂𑒨𑒳	𑒖𑓂𑒖𑓂𑒫	𑒖𑓂𑒘
ट्त	ट्व	ड्भ	ण्यु
𑒙𑓂𑒞	𑒙𑓂𑒫	𑒛𑓂𑒦	𑒝𑓂𑒨𑒳
त्कु	त्स्थ	त्यु	त्मै
𑒞𑓂𑒏𑒳	𑒞𑓂𑒮𑓂𑒟	𑒞𑓂𑒨𑒳	𑒞𑓂𑒧𑒻
त्तु	त्त्कु	त्कृ	त्त्व
𑒞𑓂𑒞𑒳	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒏𑒳	𑒞𑓂𑒏𑒵	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫
त्प्र	त्सु	तृ	त्त्कृ
𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩	𑒞𑓂𑒮𑒳	𑒞𑒵	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒏𑒵
द्धु	द्व्र	द्दु	द्दृ
𑒠𑓂𑒡𑒳	𑒠𑓂𑒫𑓂𑒩	𑒠𑓂𑒠𑒳	𑒠𑓂𑒠𑒵

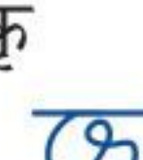

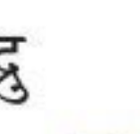

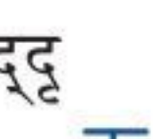

द्ब्र	द्व्य	द्गु	द्यु
द्ध्र	द्भ्य	ध्मु	ध्यु
न्ब्र	न्कु	न्द्ध	न्मु
न्दु	न्नु	न्रु	न्स्व
न्नु	न्द्धु	न्सु	न्यु
न्धु	न्तु	न्क	न्भु

प्नु	प्म	प्स्य	प्च्य
प्ल्व	प्तृ	प्तु	प्स्व
प्त्व	ब्ध्य	ब्नु	ब्ब
म्मू	म्भृ	म्बु	म्पु
म्भ्र	म्प्लु	म्प्र	म्मु
म्पू	म्भु	म्भू	

य्यु	र्गु	ल्गु	ल्मु 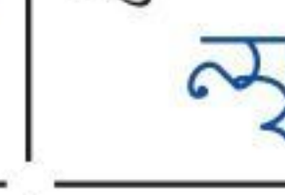
ल्फ	श्नु	श्रु	श्रू
ष्कु	ष्कृ 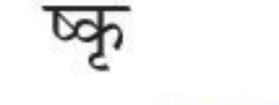	ष्ट्र	ष्टु 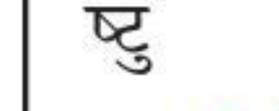
ष्ट्व 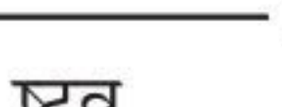	ष्पू 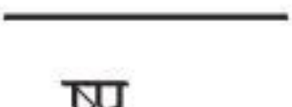	ष्खु 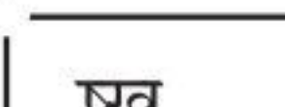	ष्क्र 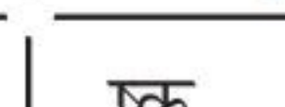
ष्क्रु	ष्णु	स्तृ	स्त्व
स्तू	स्पृ	स्फु	स्यु

स्तु	स्थु	स्कृ	स्नु
क्षु	क्ष्म्य	त्यु	

मात्रायुक्त शब्दक अभ्यास

स्तुति, स्थुल, संस्कृत, स्नुवा, द्रस्यु, अक्षुण्ण, अक्ष्म्य, गायत्र्यु, धनुष्कुण्डिकाम, परिष्कृत, राष्ट्रपति, अनुष्टुप, दृष्ट्वा, निष्क्रिय ततष्क्रुद्धः, विष्णुः, भूस्तृण, कुतस्त्वा, स्तूयते, स्पृहा, स्फुर, भैय्यु, निर्गुण, फाल्गुन, गुल्फ, अश्नुते, अश्नु, श्नूयतां, सम्प्लुतोटके, सम्प्रति, सम्मुख, शैम्पू, शम्भु, स्वयम्भू, द्वन्द्व, सन्मुख, बिन्दु, तन्नु, महेन्द्रु, अभिमन्यु, बन्धु, भवन्तु, भोगान्रूधिर, वाप्स्यसि, गोप्तृत्वे, आप्तुम, लोलुप्त्वं, लब्ध्या, ब्रुयात्, जम्मू, सम्भृत, अम्बुज, सम्पुट, सम्भ्रम, कुक्कुट, वक्त्र, यादृक्च, क्रूर, भोक्तु, सख्यु, गुग्गुल, अलङ्कृत, भुङ्क्ते, अङ्कुर, काङ्क्षे, अङ्गुली, साङ्र्ग पश्यत्स्थिता, इत्युच्यते आत्मैव, सत्तु, शुभेच्छु, यज्ज्ञात्वा, पदच्युत, उज्ज्वल, दुपद, योनिर्महृद्ब्रह्म, द्युत, शंङ्खान्दध्मु, तान्ब्रवीमि सन्वेतान्कुरून्, सत्कृत, नैतत्त्वं, उत्प्रेरक, आपत्सु, पितृणा, योद्धुम् धारिण्यु, आप्नुति।

अभ्यास

1. मिथिलाक्षरमे लिखू:

एकटा जंगलमे एकटा बड़का साँप रहैत छल। ओ चिड़ैक अंडा, बेंग, आओर छोटका-छोटका जीवकेँ खा कए अपन पेट भरैत छल। रातिभरि ओ अपना भोजनक खोजमे रहैत छल आओर दिनमे अपना बिलमे सुतल रहैत छल। कनिक्के दिनमे ओ साँप एतेक मोट भए गेल जे ओकरा अपन बिलमे घूसल नञि होइ।

तखन ओ एकटा बड़का गाछक जड़िमे रहैक विचार केलक। ओहि गाछक जड़िमे चुट्टी सभक एकटा बिल छलै जाहिमे चुट्टी सभ रहैत छल। ओ साँप चुट्टीक बिल लग जा कए बाजल जे हम एहि जंगलक राजा छी, तूँ सभ एत' सँ चलि जो। ओहि ठाम आओर जानवर सभ छल। ओ सभ ओहि साँपक डरे भागि गेल मुदा चुट्टी सभ ओहि साँपकेँ गीदड़भभकी पर कुनो ध्यान नञि देलक आओर अपन काज करैत रहल। आब ओ साँप तामसे विष भ' गेल आओर चुट्टी सभक बिल लग पहुँचि गेल। ई देखैत देरी हजारों चुट्टी ओहि बिलसँ निकलि ओहि साँपकेँ कटनाइ शुरू कए देलक। आ ओ पड़ायल फिरय मुदा चुट्टी सभ ओकरा नञि छोड़लक। अंतमे ओहि साँपकेँ अपन प्राण देबय पड़लैक।

2. मिथिलाक्षरमे लिखू:

अहाँ आर्य सभ्यताक संपादक छी वा व्यापादक? अहीं सन-सन व्यक्ति आर्यावर्तक 'आचार' कैं विलायती सिरकामे फुला अँचार बना दैत छथि। अपन भाषा-भूषा भोजन-भाव कैं छोड़ि साहेबक नकल पर दौड़ै छथि और ताही मे महत्व बुझैत छथि। कतौक व्यक्ति स्वयं सिंहचर्मावृत रासभ बनि स्त्रीओ कैं नीलवर्ण श्रृगाली बनाबक चाहै छथि और स्त्रीओक मुँह सँ मातृभाषाक स्थान मे पातृभाषा सुनक चाहै छथि। ई दासत्व बुद्धिक पराकाष्ठा थिक।

-द्विरागमन/हरिमोहन झा

3. मिथिलाक्षरमे लिखू:

निरुद्धवातायनमन्दिरोदरं हुताशनो भानुमतो गभस्तय:।
गुरूणि वासांस्यबला: सयौवना: प्रयान्ति कालेऽत्र जनस्य सेव्यताम् ।।
न चन्दनं चारुमरीचिशीतलं न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्।
न वायव: सान्द्रतुषारशीतला जनस्य चित्तं रमयन्ति साम्प्रतम्।।

-ऋतुसंहार/कालिदास

4. मिथिलाक्षरमे लिखू:

नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रान्तिहेतो-
स्त्वत्संमापर्कात्पुलकितमिव प्रौढ़पुष्पै: कदम्बै:।
य: पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणा-
मुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्योवनानि।।

-मेघदूतम्/कालिदास

5. मिथिलाक्षरमे लिखू:

दीर्घाक्षं शरदिन्दुकान्तिवदनं बाहू नतावंसयो:
संक्षिप्तं निविडोन्नतस्तनमुर: पार्श्वे प्रमृष्टे इव।
मध्य: पाणिमितो नितम्बि जघनं पादावरालांगुली
छन्दो नर्तयितुर्यथैव मनस: श्लिष्टं तथास्या वपु:।।

-मालविकाग्निमित्रम्/कालिदास

6. मिथिलाक्षरमे लिखू:

कनक-भूधर-शिखर-बासिनी
चंद्रिका-चय-चारु-हासिनि
दशन-कोटि-विकास-बंकिम-तुलित-चंद्रकले।।1।।
क्रुद्ध-सुररिपु-बलनिपातिनि
महिष-शुम्भ-निशुम्भघातिनि
भीत-भक्त-भयापनोदन-पाटव-प्रबले।।2।।
जे देवि दुर्गे दुरितताारिणि
दुर्गामारी-विमर्द-कारिणि
भक्ति-नम्र-सुरासुराधिप-मंगलप्रवरे।।3।।
गगन-मंडल-गर्भगाहिनि
समर-भूमिषु-सिंहवाहिनि
परशु-पाश-कृपाण-सायक-संख-चक्र-धारे।।4।।
अष्ट-भैरवी-सँग-शालिनी
स्वकर-कृत-कपाल-मालिनि
दनुज-शोणित-पिशित-वर्द्धित-पारणा-रभसे।।5।।
संसारबन्धा-निदानमोचिनी
चन्द्र-भानु-कृशानु-लोचनि
योगिनी-गण-गीत-शोभित-नित्यभूमि-रसे ।।6।।
जगति पालन-जन्म-मारण-
रूप-कार्य-सहस्त्र-कारण-
हरी-विरंचि-महेश-शेखर-चुम्ब्यमान-पड़े।।7।।
सकल-पापकला-परिच्युति-
सुकवि-विद्यापति-कृतस्तुति
तोषिते-शिवसिंह-भूपति-कामना-फलदे।।8।।

-विद्यापति

विद्यापति रचित गंगा स्तुति

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छाड़इत निकट नयन बह नीरे।।
कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुनि दरसन होअ पुनमति गंगे।।
एक अपराध छेमब मोर जानी।
परसल माय पाय तुअ पानी।।
कि करब जप-तप जोग धेआने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने।।
भनई विद्यापति समदओं तोही।
अन्त काल जनु विसरहु मोही।।

सिद्धिरस्तु (पंजी0)

मैथिली भाषाक पोथी
प्रकाशन हेतु संपर्क करी।

9310475355 9971919826 9278888436

E-mail : siddhirastu.trust@gmail.com
www.siddhirastutrust.com

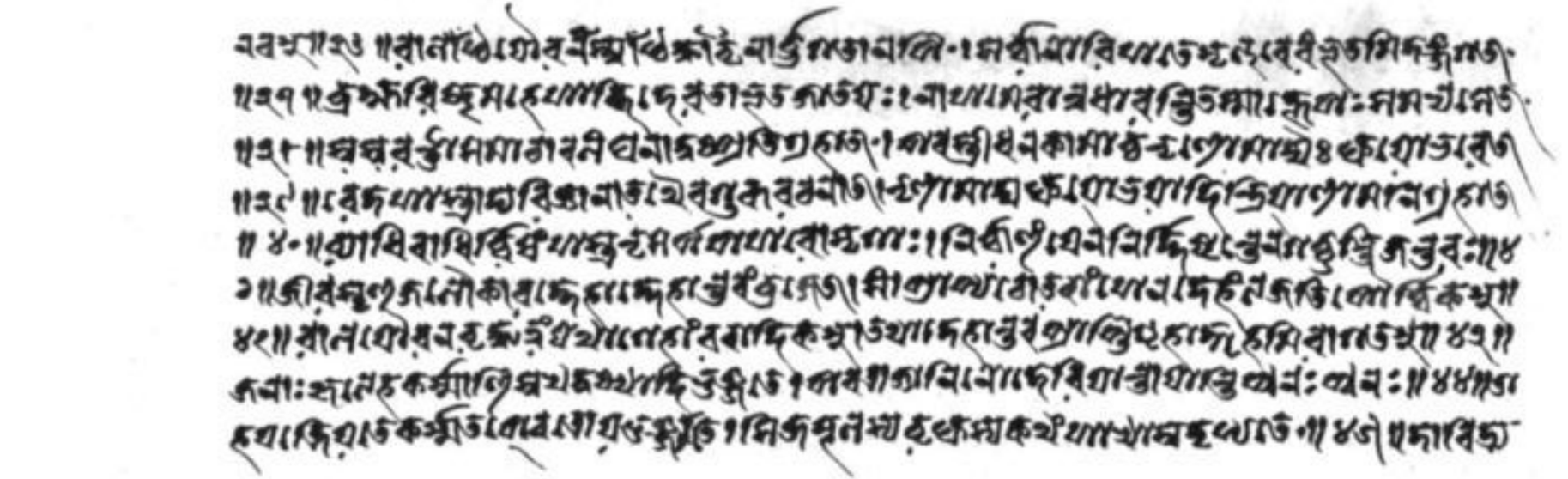

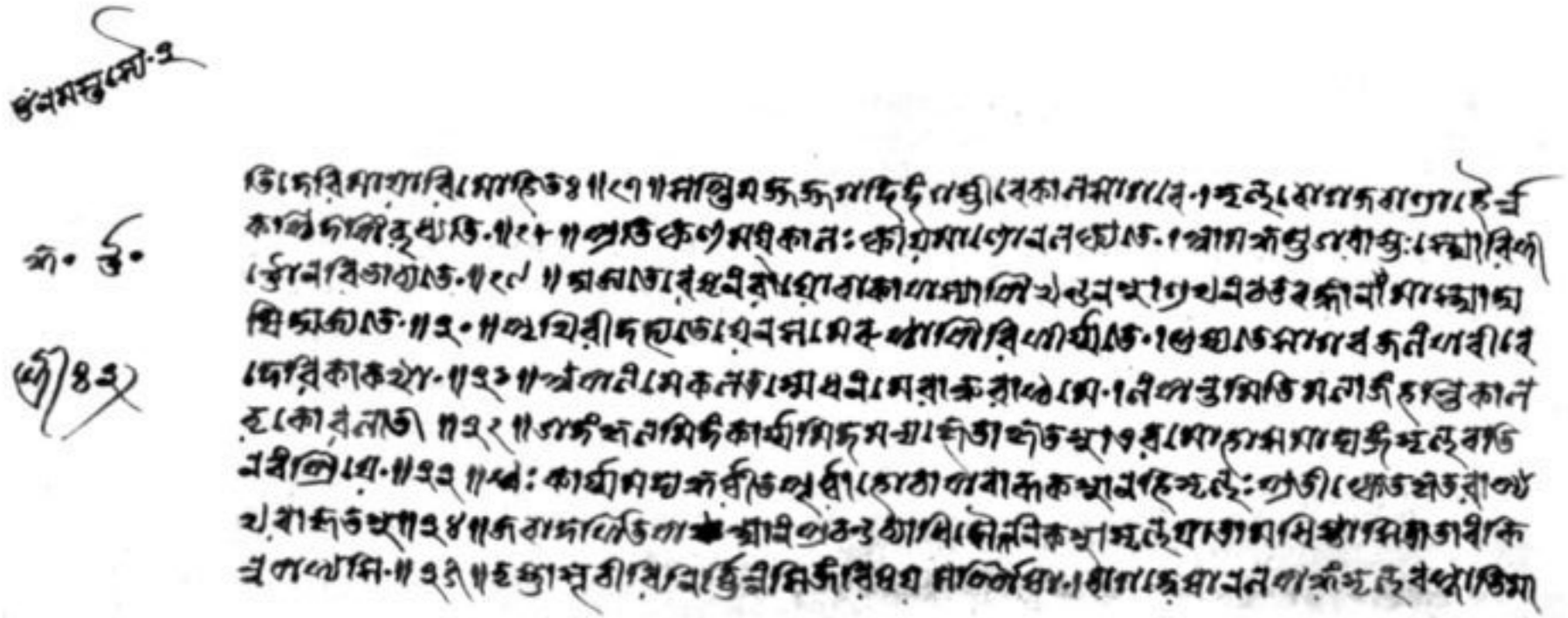

संदर्भ

1. डॉ. विश्वनाथ झा कृत 'तिरहुता वर्ण परिचय' आ 'मिथिलाक्षर अभ्यास पुस्तक'।
2. श्री अंशुमान पांडेय केँ शोधपत्र "Towards an Encoding for the Maithili Script in ISO/IEC 10646".
3. डॉ. (श्री) राम किशोर झा जे सर (डॉ.) गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ, प्रयागराज सँ सेवानिवृत छथि। डॉ॰ झा विभिन्न लिपिक जानकार आ कतेको पांडुलिपिक संपादन केने छथि, हिनक सक्रिय सहयोग।
4. श्री गजेन्द्र ठाकुर द्वारा इंटरनेट पर उपलब्ध पांडुलिपि आ विभिन्न सामग्री। डॉ॰ आद्या झाक ''मिथिलाक्षर शिक्षा''।
5. डॉ. जयकान्त मिश्रक शब्दकोष।
6. पं॰ जीवनाथ राय द्वारा लिखित पोथी ''मैथिली प्रथम पुस्तक''।
7. 1902 ई. मे पंडित भवनाथ मिश्र द्वारा मिथिलाक्षरमे हस्तलिखित 'दुर्गा सप्तशती' जकर लिप्यांतरण डा. मोहनाथ मिश्र करबौलनि।
8. छात्र सहयोगी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'मिथिला वर्ण माला'
9. पंजीकारगण सर्वश्री विश्व मोहन मिश्र, कन्हैया जी मिश्र आ विद्यानंद झा जी केँ सार्थक सहयोग।

'मिथिलाक्षर ज्ञानमाला' पुस्तकसँ संबंधित जानकारी

एखन धरि मिथिलाक्षरक सर्वमान्य ओ सर्वसमाहित फॉण्ट उपलब्ध नहि अछि तथापि कतेको प्राचीन पुस्तकसँ जानकारी लऽ वर्णमाला, संयुक्ताक्षर, शब्द, वाक्य इत्यादिक आकृति कम्प्यूटर द्वारा बनाओल गेल। ई सराहनीय प्रयास **कमल मोहन ठाकुर (चपाही, मधुबनी)** द्वारा कएल गेल। निश्चित रूपसँ किछु त्रुटि रहि गेल होयत मुदा पूर्ण विश्वास अछि जे अपने सभक सुझावसँ निरंतर सुधार होइत रहत आ आगू चलि ई पुस्तक मिथिलाक्षरक एकटा मानक आधार बनत।